04 - जन के संघर्ष, पीड़ा और उम्मीदों की सशक्त...

05 - कला साहित्य और टकराहटों का प्रभाववादी दौर

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 28 दिसंबर, 2025

06 - एआई का इंडियाः चमकती स्क्रीनें, छूटती ज़िंदगियाँ

07 - 'धुरंधर' के धमाके से निकला अनोखा अक्षय

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 118, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

दिसंबर की सांझ : राजसमंद झील

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

भागना
प्राणिमात्र की सहज प्रवृत्ति है

दुध-मुँहा बच्चा भागता है
घुटनों के बल माँ के पीछे
माँ भागती है खेत-क्यार में
दादी भागती है भेड़-बकरियों के पीछे
पिता भागते है काम पर

भागना
उतना ही स्वाभाविक है
जितने जीवन के तमाम कार्य
नदियाँ समन्दर की तरफ भागती हैं
धरती भागती है सूरज के पीछे

गाँव शहर की तरफ भागते हैं
शहर भागते हैं राजधानी की तरफ
राजधानी में बैठा राजा भागता है विदेश

भागना
कोई अपराध नहीं है
वरन् इसे शास्त्र-सम्मत कहा जा सकता है

- विजय राही

पीएम मोदी ने गुरु गोबिंद सिंह को किया याद

- कहा-अदम्य साहस, करुणा और त्याग का प्रतीक बना उनका जीवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि गुरु गोबिंद सिंह साहस, करुणा और त्याग के प्रतीक हैं तथा उनका जीवन एवं शिक्षाएं सभी को सत्य, न्याय एवं धर्मपरायणता के लिए खड़े होने और मानवीय गरिमा की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं। पीएम मोदी ने कहा कि सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह की दूरदृष्टि पीढ़ियों को सेवा और निस्वार्थ कर्तव्य की ओर निरंतर मार्गदर्शन देती रही है। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पवित्र प्रकाश उत्सव के अवसर पर हम उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। वह साहस, करुणा और त्याग के प्रतीक हैं। पीएम मोदी ने आगे लिखा कि उनका जीवन और शिक्षाएं हमें सत्य, न्याय, धर्मपरायणता के लिए खड़े होने और मानवीय गरिमा की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं। आपको बता दें कि प्रधानमंत्री ने इस वर्ष की शुरुआत में तख्त श्री हरिमंदिर पटना साहिब की अपनी यात्रा की कुछ तस्वीरें भी साझा कीं, जहां उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह एवं माता साहिब कौर से संबंधित पवित्र 'जोड़ा साहिब' (जूतों की एक जोड़ी) के दर्शन भी किए थे। मोदी ने नौ जनवरी, 2022 को घोषणा की थी कि श्री गुरु गोबिंद सिंह के पुत्रों साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत की याद में 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में मनाया जाएगा। वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में सरकार देश भर में ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर रही है जिनका उद्देश्य नागरिकों को साहिबजादों के असाधारण साहस एवं सर्वोच्च बलिदान के बारे में बताना है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक कार्यक्रम में भाग लिया, जहां उन्होंने कहा था कि दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के साहिबजादों (पुत्रों) का बलिदान क्रूर मुगल शासन के खिलाफ भारत के अदम्य साहस प्रतीक है।

अटल जी के जन्मशती वर्ष में मध्यप्रदेश का हो रहा अभ्युदय: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने सतना में 652.54 करोड़ रूपए से अधिक लागत के विकास कार्यों का किया लोकार्पण एवं भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हम भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मशती वर्ष मना रहे हैं। अटल जी के जन्मशती वर्ष में ही मध्यप्रदेश का रीयलस्टिक डेवलपमेंट (अभ्युदय) हो रहा है। हम मध्यप्रदेश में सरकार नहीं, परिवार चलाते हैं। प्रदेश के हर घर को परिवार मानकर जनहित के निर्णय ले रहे हैं। हमारे निर्णयों में अंत्योदय भी है और ग्रामोदय भी। सतना जिला भगवान श्रीराम की कर्मभूमि रहा है। इसलिए हमारी सरकार चित्रकूट को भव्य और दिव्य धाम के

- सतना विमानतल की एयरस्ट्रिप की लंबाई बढ़ाकर 1800 मीटर तक की जाएगी
- मध्यप्रदेश में नए साल से चलेंगी सरकारी बसें

रूप में विकसित करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सतना को स्मार्ट सिटी योजना की सौगात देकर विकास कार्यों की गंगा बहा दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को सतना के आईएसबीटी परिसर में आयोजित लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 31 करोड़ रूपए की लागत से नवनिर्मित आईएसबीटी का लोकार्पण किया और इसका नामकरण अटल बिहारी वाजपेयी अंतर्राज्यीय बस अड्डा करने की घोषणा की। अटल जी राजनीति में शुचिता और राष्ट्रीयता के प्रतीक है। उन्होंने राष्ट्र, धर्म और जनकल्याण के लक्ष्यों को लेकर सरकार चलाई। भारतीय संसद में 50 वर्षों तक अटल जी की निर्भीक वाणी गूंजती रही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सतना में आईएसबीटी बन चुका है। राज्य सरकार की भी पूरी तैयारी है कि नए साल से प्रदेश में सरकारी बसों का संचालन प्रारंभ हो जाएगा। मुख्यमंत्री सुगम लोक परिवहन सेवा के नाम से प्रदेश के गांव-गांव तक सस्ती और सुविधाजनक बस परिवहन सेवा प्रारंभ कर दी जाएंगी। शहरों में लग्जरी बसें चलाई जाएंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घोषणा करते हुए कहा कि सतना विमानतल की एयरस्ट्रिप की वर्तमान लंबाई बढ़ाकर अब 1800 मीटर तक की जाएगी, जिससे यहां जेट विमान भी उतर सकें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सतना जिले का कोना-कोना सिंचित किया जाएगा। बरगी नहर परियोजना का पूरा लाभ सतना जिले को मिलेगा। इससे यहां की डेढ़ लाख हैक्टेयर से अधिक कृषि भूमि को सिंचाई की स्थायी सुविधा मिलेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सतना में 652.54 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाले 12 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इसमें नवीन आधुनिक आईएसबीटी एवं धवारी क्रिकेट स्टेडियम के नवीनीकरण कार्य के लोकार्पण सहित करीब 383 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित होने वाले 650 बिस्तरीय नवीन अस्पताल का भूमिपूजन भी शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह तीनों सौगातें सतना के विकास में चार चांद लगाएंगी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हितलाभ भी वितरित किये।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह पूरा सप्ताह मध्यप्रदेश के विकास का ऐतिहासिक सप्ताह रहा है। धार और बैतूल में पीपीपी मॉडल पर मेडिकल कॉलेज का भूमिपूजन हुआ। ग्वालियर में अभ्युदय मध्यप्रदेश ग्रोथ समिट का आयोजन हुआ।

इंडिगो संकट

सरकार ने गोपनीय रखी, दूसरी रिपोर्ट भी आई

जांच पैनल ने 22 दिन में सौंपी रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिगो में बड़े पैमाने पर फ्लाइट कैंसिलेशन की जांच करने वाले पैनल ने शुक्रवार शाम अपनी रिपोर्ट एविएशन रेगुलेटर को सौंप दी है। इस कमेटी को 22 दिन पहले 5 दिसंबर को बनाया गया था। हालांकि रिपोर्ट्स में क्या लिखा है, इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। उधर, अंग्रेजी न्यूज पेपर की एक रिपोर्ट के मुताबिक डीजीसीए के एक अलग सिस्टमैटिक रिव्यू यानी एक तरह की जांच में कहा गया है कि इंडिगो ने नवंबर में अपने 307 एयरबस-विमानों के बेड़े को चलाने के लिए 4,575 पायलटों को नियुक्त किया था। यह ग्लोबल बेस्ट प्रैक्टिस के तहत जरूरी 3,684 पायलटों की संख्या से 891 ज्यादा थे। इससे पता चलता है कि क्रू की कमी नहीं, बल्कि शेड्यूलिंग (रोस्टर) में गड़बड़ी की वजह से ही फ्लाइट्स कैंसिल हुईं। इधर, इंडिगो ने फ्लाइट कैंसिलेशन प्रभावित यात्रियों को 10,000 के ट्रैवल वाउचर जारी करना शुरू कर दिया है। ये वाउचर 12 महीने तक वैध रहेंगे, जो इंडिगो की किसी भी फ्लाइट में इस्तेमाल किए जा सकेंगे। दरअसल, दिसंबर महीने की शुरुआत में इंडिगो की 10 दिनों के भीतर 5,000 से ज्यादा उड़ानें रद्द हो गई थीं, जिससे देश भर में हजारों यात्री फंस गए थे। सिविल एविएशन मिनिस्ट्री ने यह पता लगाने के लिए एक सिस्टमैटिक रिव्यू का भी आदेश दिया था कि क्या एयरलाइन की तैयारी बदले हुए नियमों को लेकर पर्याप्त थी।

यह समीक्षा नवंबर के आखिर से दिसंबर के मध्य तक यात्रियों को 1,500 करोड़ से अधिक की रिफंड राशि लौटाने के बाद शुरू की गई थी। इसमें खुलासा हुआ कि ऑपरेशन,

दावा-

क्रू की कोई कमी नहीं रोस्टर में गड़बड़ी थी

ट्रेनिंग, छुट्टी और इमरजेंसी कंडीशन को कवर करने के लिए हर प्लेन में छह क्रू सेट रखे जाते हैं।

इंडिगो ने इस पूरे संकट को लेकर अपना जवाब भी डीजीसीए को दिया था, जिसमें कहा गया था कि पायलटों की संख्या तय सीमा से ज्यादा है, और असली दिक्कत पायलटों की शेड्यूलिंग और रोस्टरिंग में है। रिव्यू में यह भी बताया गया कि एयरलाइन के क्रू का उपयोग रेगुलेशन के अनुसार हर माह 100 घंटे की तुलना में 55 फीसदी था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 28 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल

जगमोहन जोशी
(समीक्षक और लेखक)

सिनेमा, संस्कृति और संवाद का त्रिवेणी महाकुंभ

खजुराहो की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरती पर 11वें %खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल% का भव्य आयोजन 16 दिसंबर से 22 दिसंबर तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह फेस्टिवल न केवल सिनेमा प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना, बल्कि कला, संस्कृति और विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच भी साबित हुआ। इस अवसर पर नवोदित फिल्मकारों को भी सम्मानित किया गया। यह पहल समाज के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रही।

खजुराहो का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल इस साल दिवंगत अभिनेता धर्मेंद्र एवं असरानी को समर्पित किया गया, वहीं फिल्म जगत में 100 साल पूरे करने वाले कलाकार वी शांताराम एवं गुरुदत्त को याद किया गया। 9 टपरा टॉकीज का निर्माण किया गया जिसमें 7 टॉकीज में धर्मेंद्र, असरानी, वी शांताराम, गुरुदत्त की फिल्में दिखाई गई। एक टपरा टॉकीज में हॉलीवुड की फिल्म दिखाई गई तथा एक टपरा टॉकीज में नवोदित फिल्मकारों की फीचर फिल्म, शॉर्ट फिल्म एवं डॉक्यूमेंट्री फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई नवोदित फिल्मकारों की सात दिनों में 102 फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई। इस फेस्टिवल के संस्थापक और आयोजक अभिनेता राजा बुंदेला ने बताया कि इस प्रतिष्ठित आयोजन में भारतीय सिनेमा के दिग्गज कलाकारों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रमुख रूप से अभिनेता अनुपम खेर, सौरभ शुक्ला अभिनेत्री पूनम ढिल्लो, अभिनेत्री सुष्मिता मुखर्जी,अभिनेत्री दीपशिखा नागपाल सहित अनेक नामचीन कलाकारों ने फेस्टिवल की शोभा बढ़ाई। इनके साथ ही देश-विदेश से आए फिल्म निर्माता, निर्देशक, लेखक और सिनेमेटोग्राफर भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। फेस्टिवल की एक विशेष उपलब्धि यह रही कि इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ़ इंडिया (आईएफएफआई) की जूरी के सदस्यों ने लगातार सात दिनों तक सहभागिता की और विभिन्न सत्रों, स्क्रीनिंग्स व संवाद कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाई। इससे फेस्टिवल की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता और अधिक सशक्त हुई।

फेस्टिवल के दौरान भारत के सभी प्रांतों से आए कलाकारों ने अपने-अपने लोक नृत्य और लोक संगीत की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। इसके अलावा मुंबई से आमंत्रित प्रोफेशनल डांस ग्रुप और ऑर्केस्ट्रा ने गीत-संगीत व नृत्य की शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। हर संध्या सांस्कृतिक रंगों से सराबोर रही, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम देखने को मिला। खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के दौरान एक टपरा टॉकीज में सातों दिन आपातकालीन दौर की इमरजेंसी प्रताड़ना एवं मीसाबंदी विषय पर आधारित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर मीसा बंदियों को क्षत्रसाल गौरव सम्मान से सम्मानित भी किया गया।

फेस्टिवल में आधुनिक तकनीक के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के उपयोग और उसके संभावित दुष्परिणामों की जानकारी देने हेतु विशेष स्टॉल लगाया गया, जहां दर्शकों ने तकनीक से जुड़े सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं को समझा। सामाजिक सरोकार के तहत लोगों को नि:शुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में इलाज के साथ-साथ नि:शुल्क दवाइयों का वितरण भी किया गया, जिससे बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने लाभ उठाया। फिल्मों से जुड़े उत्कृष्ट कलाकारों, तकनीशियनों और सिने जगत में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को सिने गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। वहीं चिकित्सा, राजनीति, समाजसेवा और शिक्षा जैसे अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तित्वों को क्षत्रसाल गौरव सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया। नवोदित फिल्मकारों को भी सम्मानित किया गया यह पहल समाज के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रही।

फेस्टिवल का एक महत्वपूर्ण पक्ष विद्यार्थियों और युवा फिल्मकारों के लिए आयोजित मास्टर क्लास और वर्कशॉप रहीं। इन सत्रों में अभिनय, निर्देशन, लेखन, सिनेमेटोग्राफी, एडिटिंग और फिल्म निर्माण की अन्य विधाओं पर विशेषज्ञों ने विस्तार से व्याख्यान दिए। छात्रों को सीधे अनुभवी फिल्मकारों से संवाद करने और सीखने का अवसर मिला, जो उनके भविष्य के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। इस तरह खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल सिनेमा, संस्कृति और शिक्षा का एक समृद्ध संगम बनकर उभरा। इस आयोजन ने न केवल खजुराहो को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म मानचित्र पर और मजबूत पहचान दिलाई, बल्कि युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का सशक्त मंच भी प्रदान किया।

खजुराहो जैसे पर्यटन स्थल के लिए ट्रेन और फ्लाइट की सुविधाएं सीमित हैं। ऐसे में यदि किसी दिन फ्लाइट कैंसिल हो जाए, तो उसी दिन खजुराहो पहुंच पाना कठिन हो जाता है। फेस्टिवल के दौरान कई आमंत्रित कलाकारों की इंडिगो की फ्लाइट कैंसिल हो गई, जिसमें नाना पाटेकर, भाग्यश्री, डॉ चन्द्रप्रकाश द्विवेदी, प्रदीप रावत, राज बब्बर, हेमा मालिनी, शुभांगी अत्रे और ऋतुपर्णा सेनगुप्ता आदि शामिल रहे। नाना पाटेकर मुंबई से दिल्ली तो पहुंच गए, लेकिन दिल्ली से खजुराहो नहीं आ सके। भाग्यश्री वाराणसी तक पहुंचीं, पर खजुराहो नहीं आ पाईं। वहीं अनुपम खेर को एक दिन वाराणसी में रुकना पड़ा और अगले दिन ट्रेन से खजुराहो आना पड़ा, जहां कोहरे के कारण ट्रेन की लेटलतीफी का सामना करना पड़ा। इन तमाम चुनौतियों के बावजूद आयोजकों की मेहनत, समन्वय और प्रतिबद्धता के चलते खजुराहो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसे दर्शकों और सिनेप्रेमियों से भरपूर सराहना मिली।

अनुपम खैर, पूनम ढिल्लो, सौरभ शुक्ला, दीपशिखा नागपाल, पंकज बैरी, निर्देशक एन चंद्रा, जयंत देशमुख इंदिरा तिवारी, वेद थापर निर्देशक सुधीर आजाद को भारती प्रधान, अवधेश महाराज एवं फ्रांस अभिनेत्री को मारियन बोर्गो सिनेमेटोग्राफर मलय राय सुबोध सिन्हा (साहित्यकार), गौरव शर्मा, शिबाशीष सरकार, भूपिंदर सिद्धू, सुरिंदर अहलावत, डॉ योगेश श्रीवास्तव और गौरव शर्मा, फेदुद्दीन फरीद, मेहंदी बशीर खान एवं सुरेश राम विदेशी कलाकारों में रॉबर्ट मैक्सीन, अलफ्रेंडो केन्डेरा, मार्क एन्जल्स विनसेंट रोबिन, मिस्टर फर्नांडो मैगलानेस माटो, सुश्री टिन्ना स्वेन्सडॉटिर, रेचल जोहान, वाह्युनी इंडोनेसिया, मूथिया एसफंड इंडोनेशिया। इसके अलावा %छत्रसाल गौरव सम्मान% विजय कुमार खत्री, बसंत चतुर्वेदी, अरुण कुमार उर्फ पप्पू अवस्थी, मीसाबंदी एवं स्वतंत्रता सेनानी मधुसूदन पितरे, वीरेंद्र कुमार रिछारिया एवं राहुल अग्रहरी, एमएस राणा मध्यप्रदेश पर्यटन, जावेद मंसूरी, थाना प्रभारी प्रशांत कुमार सेन, पुलिस इंस्पेक्टर ममता कांबले, प्रकाश चंसोरिया, स्वप्निल कोठरी, विजय शंकर बबेले और राजेंद्र त्रिपाठी।

एलएसी पर हर टक्कर के लिए तैयार हो रहा भारत

● सुरंगों से एयरबेस तक बड़े 'खेल' का बन गया है प्लान ● भारत ने बनाया अभेद्य सुरक्षा प्लान,चीन की उड़ेगी नींद

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय की ऊंची चोटियों और दुर्गम घाटियों में भारत एक बड़े पैमाने पर निर्माण अभियान चला रहा है। सड़कें, सुरंगें, पुल और हवाई पट्टियां बनाई जा रही हैं। यह सब चीन के साथ सीमा पर संभावित टकराव की तैयारी के तहत हो रहा है। 2020 के गलवान घाटी संघर्ष के बाद भारत ने अपनी रक्षा रणनीति में बड़ा बदलाव किया है। द वॉल स्ट्रीट जर्नल की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत सैकड़ों मिलियन डॉलर खर्च कर हिमालय में बुनियादी ढांचे को मजबूत कर रहा है, ताकि सीमा पर अपनी स्थिति को मजबूत किया जा सके। 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच हिंसक झड़प हुई थी। इस संघर्ष में 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए, जबकि चीन की ओर से भी भारी नुकसान हुआ। यह 45 वर्षों में पहली बार था जब सीमा पर गोलीबारी के बिना हाथापाई हुई।

न्योमा एयरबेस और हवाई कनेक्टिविटी

भारत ने सीमावर्ती क्षेत्रों में हवाई कनेक्टिविटी भी बड़े पैमाने पर बढ़ाई है। लद्दाख में 14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित न्योमा एयरबेस चीन सीमा से मात्र 19 मील दूर है। यहां टी-130ए जैसे बड़े विमान उतर सकते हैं। यह रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। भारत ने 30 से अधिक हेलिपैड बनाए हैं और कई हवाई पट्टियों का निर्माण या अपग्रेड किया है। अन्य परियोजनाओं में अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और उत्तराखंड में सड़कें और पुल शामिल हैं। हाल ही में 125 परियोजनाओं का उद्घाटन हुआ, जिनमें श्योक सुरंग और कई पुल शामिल हैं।

प्रमुख परियोजनाएं
हिमालय को मजबूत बनाना

भारत की बॉर्डर रोड्स ऑर्गनाइजेशन इस अभियान की रीढ़ है। 2025 में बीआरए का बजट 810 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। हजारों किलोमीटर सड़कें, दर्जनों हेलीपैड और कई हवाई अड्डे बनाए जा रहे हैं। यह सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना है। 11,500 फीट की ऊंचाई पर बन रही यह 14 किलोमीटर लंबी सुरंग 750 मिलियन डॉलर से अधिक की लागत वाली है। 2020 के संघर्ष के बाद निर्माण शुरू हुआ। पूरा होने के बाद यह सुरंग लद्दाख तक सालभर आवाजाही सुनिश्चित करेगी। अभी भारी बर्फबारी के चलते लद्दाख कई-कई महीनों तक कट जाता है।

रेड कार्पेट से सख्त जवाबी तैयारी तक

स्टिमसन सेंटर के सीनियर फेलो डैनियल मार्क के हवाले से लिखा कि कभी भारत में यह धारणा थी कि सीमावर्ती इलाकों में बड़ी सड़कों का निर्माण सैन्य दृष्टि से नुकसानदेह हो सकता है- मानो किसी संभावित आक्रमण के लिए रेड कार्पेट बिछा दिया जाए लेकिन 2000 के दशक के मध्य से यह सोच बदलने लगी, खासकर तब जब चीन ने तिब्बत और शिनजियांग में सड़क और रेल नेटवर्क का तेजी से विस्तार किया। विशेषज्ञों का मानना है कि बढ़ता बुनियादी ढांचा और गश्त विवादित क्षेत्रों- जैसे पेंगोंग त्सो में टकराव की आशंकाएं भी बढ़ा सकता है, जहां दोनों सेनाएं अलगाव समझौतों के बावजूद मौजूद हैं।

अनंतनाग के बाजार में दिखे लश्कर के आतंकी

● दावा-इनमें एक पाकिस्तानी, दूसरा कुलगाम का लतीफ

अनंतनाग (एजेंसी)। अनंतनाग के बाजार में लश्कर के दो आतंकियों का सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद डेंगरपोरा और काजीबाग इलाके में सर्च ऑपरेशन लॉन्च किया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इनमें से एक आतंकी कुलगाम के खेरवन का रहने वाला मो. लतीफ भट है। वीडियो में नजर आए दूसरे आतंकी के पाकिस्तानी कमांडर हंजुल्लाह होने का दावा किया जा रहा है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि होना बाकी है। सेना और कश्मीर पुलिस के जवान इलाके में दोनों की तलाश कर रहे हैं। स्थानीय लोगों से भी पूछताछ की जा रही है ताकि आतंकियों को पकड़ने में मदद मिल सके। पिछले दिनों ऊधमपुर में भी 2 आतंकियों के देखे जाने के बाद जम्मू से कश्मीर तक 80 गांवों में तलाशी ली गई थी। जवानों ने हर घर के दरवाजे खुलवाकर जांच की थी।

बीएसएफ का दावा- 72 आतंकी लॉन्च पैड फिर सक्रिय

पिछले माह बीएसएफ के अधिकारी ने खुलासा किया था कि भारत की ऑपरेशन सिंदूर के बाद नुकसान झेलने के बावजूद पाकिस्तान ने एक बार फिर जम्मू क्षेत्र के सामने करीब 72 आतंकी लॉन्च पैड सक्रिय कर दिए हैं। इनमें से 12 लॉन्च पैड सियालकोट और जफरवाल सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास हैं, करीब 60 लॉन्च पैड एलओसी के पास सक्रिय बताए गए हैं। इसके बाद सीमा पर चौकसी और बढ़ा दी गई है।

लतीफ ने नवंबर में जॉइन किया था लश्कर

जो वीडियो सामने आया है उसमें 25 दिसंबर की तारीख है। समय शाम के 6.12 का है। वीडियो में नजर आया स्थानीय आतंकी मोहम्मद लतीफ कुलगाम के खेरवन का रहने वाला है। इसके बारे में यह दावा किया जा रहा है कि उसने नवंबर में लश्कर के शैडो संगठन कश्मीर रिवोल्यूशन आर्मी जॉइन किया था। सुरक्षा बल दोनों आतंकियों की तलाश में 30 घंटे से कर रहे हैं, हालांकि अभी तक उन्हें कोई सफलता नहीं मिली है। वहीं, आतंकियों ने भी अभी तक किसी भी घटना को अंजाम नहीं दिया है।

पुलिस के लिए बड़ा कदम उठाने की तैयारी

● अमित शाह बोले-कॉमन एटीएस की जरूरत

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने आतंकवाद की चुनौती से निपटने के उद्देश्य से पूरे देश के लिए साझा आतंकवाद रोधी दस्ता (एटीएस) बनाए जाने पर जोर दिया। शुक्रवार को उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अभेद्य और मजबूत आतंकवाद निरोधी ग्रिड बनाना है, जो हर तरह की चुनौती का सामना कर सके। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में हम संगठित अपराध पर 360 डिग्री प्रहार करने की योजना बना रहे हैं। अमित शाह ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी के दो दिन के आतंकवाद रोधी सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद कहा,एनआईए ने बहुत मेहनत कर एक साझा एटीएस स्ट्रक्चर बनाकर राज्यों की पुलिस को भेजा है। जब हम पूरे देश का कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर बनाते हैं, तब हर लेयर पर समान तैयारी

का हमें मौका मिलता है। देशभर की पुलिस के लिए एक कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर बहुत जरूरी है और सभी राज्यों के पुलिस महानिदेशकों को इसका जल्द से जल्द पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी राज्यों की एटीएस को नेटग्रिड के इस्तेमाल की आदत डालनी चाहिए। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर और संचालन एकरूपता आतंकवादियों को कठघरे में खड़ा करने में फायदा देती है। उन्होंने कहा,जब तक हम ऑपरेशनल यूनिफॉर्मिटी नहीं लाते तब तक हम खतरे का सही आंकलन, इंटेलीजेंस शेयरिंग का सही उपयोग और कोऑर्डिनेटेड काउंटर एक्शन नहीं ले सकते। हमें जांच से लेकर अभियोजन और काउंटर एक्शन तक यूनिफॉर्मिटी को सुनिश्चित करना है। गृह मंत्री ने इस अवसर पर एनआईए की ओर से अपडेट अपराध मैनुअल, हथियार ई-डेटाबेस और संगठित अपराध नेटवर्क डेटाबेस की भी शुरुआत की।

● भारत में महिला सुरक्षा चुनौती, घरेलू हिंसा सबसे बड़ा अपराध

सर्वे में 40 फीसदी महिलाएं शहरों में असुरक्षित महसूस करती हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में महिलाओं की सुरक्षा 2025 में भी एक जटिल चुनौती बनी हुई है, जहां आधिकारिक अपराध आंकड़े स्थिरता दिखाते हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर अनरिपोर्टेड हिंसा और असुरक्षा की भावना व्यापक है। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2023 की रिपोर्ट

के अनुसार, महिलाओं के खिलाफ अपराध के 4,48,211 मामले दर्ज किए गए, जो 2022 के 4,45,256 मामलों से मामूली बढ़ोतरी दर्शाता है। राष्ट्रीय अपराध दर प्रति लाख महिलाओं पर 66.2 रही, जबकि पति या रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता (29.8 फीसदी) सबसे प्रमुख श्रेणी बनी हुई है। ये आंकड़े केवल उन घटनाओं को ही प्रतिबिंबित करते हैं जो पुलिस तक पहुंचती हैं। वास्तविकता इससे कहीं अधिक गंभीर है। राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) की नेशनल एनुअल रिपोर्ट एंड इंडेक्स ऑन विमेंस सेफ्टी (एनएआरआई) 2025 के सर्वे में, 31 शहरों में 12,770 महिलाओं से बातचीत के आधार पर पाया कि राष्ट्रीय सुरक्षा स्कोर 65 है, लेकिन 40 महिलाएं खुद को शहरों में असुरक्षित महसूस करती हैं।

● घरेलू हिंसा, सार्वजनिक उत्पीड़न में अक्सर रिपोर्ट दर्ज नहीं होती- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5, 2019-21) के आंकड़े भी यही अंतर उजागर करते हैं : लगभग 32 फीसदी विवाहित महिलाओं ने जीवनकाल में पति से शारीरिक, यौन या भावनात्मक हिंसा का सामना किया। घरेलू हिंसा, सार्वजनिक उत्पीड़न, ऑनलाइन धमकियां और ज्ञात अपराधियों द्वारा दुर्व्यवहार अक्सर रिपोर्ट नहीं होते, क्योंकि सामाजिक दबाव, परिवार का सम्मान, पुलिस पर अविश्वास और लंबी कानूनी प्रक्रिया बोलने की कीमत बढ़ा देते हैं।

यूपी में जातिगत गोलबंदी नहीं की जाएगी बर्दाश्त

● ब्राह्मण विधायकों की भोज बैठक पर पंकज चौधरी की चेतावनी

मथुरा (एजेंसी)। यूपी बीजेपी का अध्यक्ष बनने के बाद केंद्रीय राज्य मंत्री पंकज चौधरी शनिवार को विश्व प्रसिद्ध ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में दर्शनों के लिए वृंदावन पहुंचे। मंदिर में माथा टेकने और पूजा-अर्चना करने के बाद पंकज चौधरी ने

मीडिया से बातचीत में कहा कि 2027 में एक बार फिर बीजेपी उत्तर प्रदेश के अंदर अपनी पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा कि जनता का भरोसा और आशीर्वाद बीजेपी के साथ है। यूपी में किए जा रहे विकास कार्य और प्रदेश की कानून व्यवस्था बीजेपी की प्रचंड जीत का आधार बनेगी। इस दौरान पंकज चौधरी ने विपक्ष के बयानों और लखनऊ में हुई बीजेपी के ब्राह्मण विधायकों की बैठक के मुद्दे पर भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि हाल ही में हुई ब्राह्मण विधायकों की अलग बैठक और उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों पर प्रदेश संगठन ने कड़ा रुख अपनाया है।

भारत ने चिनाब नदी पर एक और परियोजना को दी मंजूरी

सिंधु समझौते का राग अलापता रह गया पाक

श्रीनगर (एजेंसी)। भारत ने जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में चिनाब नदी पर 260 मेगावाट की दुलहस्ती स्टेज-जलविद्युत परियोजना को पर्यावरण मंजूरी दे दी है। पर्यावरण मंत्रालय के अंतर्गत विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति (ईएसी) ने इस महीने की शुरुआत में अपनी

मिला झटका

45वीं बैठक में इस रन-ऑफ-द-रिवर परियोजना के लिए मंजूरी दी, जिसकी अनुमानित लागत 3,200 करोड़ रुपये से अधिक है। यह मंजूरी निर्माण टेंडर जारी करने का रास्ता साफ करती है। पाकिस्तान लंबे समय से सिंधु जल समझौते का राग अलापता रहा है, लेकिन भारत के ताजा कदमों से उसकी चिंताएं और बढ़ गई हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि समझौते के निलंबन से भारत को पश्चिमी नदियों पर अधिक स्वतंत्रता मिली है, जिससे जल सुरक्षा और ऊर्जा उत्पादन में मजबूती आएगी।

जानकारी के अनुसार, समिति ने नोट किया कि चिनाब बेसिन का जल भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 की सिंधु जल संधि के प्रावधानों के अनुसार साझा किया जाता था और परियोजना के पैरामीटर संधि के अनुरूप योजना बनाई गई थी। हालांकि, सिंधु जल संधि 23 अप्रैल 2025 से प्रभावी रूप से निलंबित है। सिंधु जल संधि लागू होने के दौरान पाकिस्तान को सिंधु, झेलम और चिनाब नदियों पर अधिकार थे, जबकि भारत को रावी, ब्यास और सतलुज पर। संधि के निलंबन के साथ अब केंद्र सरकार सिंधु बेसिन में कई जलविद्युत परियोजनाओं को तेजी से आगे बढ़ा रही है जैसे सावलकोटे, रतले, बुरसर, पाकल दुल। दुलहस्ती स्टेज-मौजूदा 390 मेगावाट की दुलहस्ती स्टेज- जलविद्युत परियोजना (दुलहस्ती पावर स्टेशन) का विस्तार है, जो नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनएचपीसी) द्वारा 2007 में चालू की गई थी और सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। योजना के तहत, स्टेज-ए पावर स्टेशन से पानी को 3,685 मीटर लंबी और 8.5 मीटर व्यास वाली अलग सुरंग से डायवर्ट होगा।

सतना में औद्योगिक विकास के लिए 100 एकड़ भूमि पर बनाएंगे नया इंडस्ट्रियल पार्क : सीएम यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अंतरिक्ष, उद्योग, रक्षा सहित सभी क्षेत्रों में विश्व में अपनी उपलब्धियों का परचम लहरा रहा है। राज्य सरकार भी प्रदेश में उद्योग-व्यापार को बढ़ावा देने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ कार्य कर रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने मध्यप्रदेश में क्षेत्रीय स्तर पर इंडस्ट्री कॉन्क्लेव करने के निर्णय की सराहना की है। इन्हें अब जिला स्तर पर भी आयोजित किया जाएगा। पहले कटनी में माइनिंग सेक्टर पर केंद्रित रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव हुई, अब सतना में एमएसएमई सेक्टर पर आधारित रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित की जाएगी। प्रदेश सर्व सुविधा युक्त बनें, मध्यप्रदेश विकास की दौड़ में सबसे आगे रहे और युवाओं को रोजगार मिले, इसके लिए राज्य सरकार हर कदम पर उद्यमियों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को सतना में विंध्य व्यापार मेले को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सतना, विंध्य क्षेत्र में व्यापार-व्यापार का बड़ा केंद्र है। विंध्य व्यापार मेले के सफल आयोजन के लिए सतनावासी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि सतना में औद्योगिक विकास के लिए 100 एकड़ भूमि पर नया इंडस्ट्रियल पार्क बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विंध्य व्यापार मेले के आयोजन के लिए विंध्य चैंबर ऑफ कॉमर्स को 8 एकड़ भूमि देने एवं सतना में व्यापारिक गतिविधियों, सांस्कृतिक सम्मेलन आयोजित करने के लिए पीपीपी मोड पर गीता भवन बनाए जाने की घोषणा भी की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने 2 वर्षों के कार्यकाल में विंध्य क्षेत्र में एयर कनेक्टिविटी बढ़ाई है। सतना विमानतल की एयरस्ट्रिप को बढ़ाकर 1800 मीटर तक किया जा रहा है, जिससे यहां बड़े जेट विमान भी लैंड कर पाएं। चित्रकूट धाम और शारदा माता मंदिर से सतना क्षेत्र धार्मिक पर्यटन के लिए भी अहम है। राज्य सरकार ने धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हेली सेवा शुरू की है। मुश्किल समय में सहायता के लिए पीएमश्री एयर एंबुलेंस की व्यवस्था की गई है। नए साल में प्रदेशवासियों को सरकारी बस सेवा की सौगात भी मिलेगी। उन्होंने कहा कि सरकार ने सड़क हादसों में घायलों के लिए मदद के लिए राहवीर योजना की शुरुआत की है। घायलों को अस्पताल पहुंचाकर सहायता करने वाले को सरकार 25 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि दे रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने अगले 5 सालों में राज्य का बजट दोगुना कर लगभग 7 लाख करोड़ करने का लक्ष्य रखा है। युवाओं को रोजगार के अवसर दिए जा रहे हैं। युवाओं को स्वरोजगार के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। होटल व्यवसाय में राज्य सरकार ने 30 प्रतिशत की सब्सिडी का प्रावधान किया है। अगर कोई रोजगार आधारित उद्योग लगाए तो उन्हें श्रमिकों के वेतन में 5 हजार रुपए की सहायता दी जा रही है। राज्य में 32 लाख किसानों को 90 प्रतिशत अनुदान पर सोलर पम्प दिए जा रहे हैं। किसानों को बिजली के बिल और अस्थाई कनेक्शन से मुक्ति मिल रही है। किसानों को 60 हजार मूल्य के पंप पर 53 हजार रुपए की सब्सिडी दी जा रही है। राज्य सरकार कुल 30 हजार करोड़ का अनुदान प्रदान करती है।

सतना सांसद श्री गणेश सिंह ने कहा कि विंध्य क्षेत्र में सतना जीएसटी कलेक्शन में अग्रणी जिला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के कार्यकाल में मध्यप्रदेश में 30 लाख करोड़ से अधिक का निवेश आया है। सतना में रोजगार एवं व्यापार-व्यवसाय के प्रोत्साहन के लिए एमएसएमई सेक्टर की रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सतना ऑटोमोबाइल विक्रय का बड़ा केंद्र है।

विंध्य चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री सतीश सुखेजा ने कहा कि सतना विंध्य की औद्योगिक एवं पवित्र नगरी है। विंध्य व्यापार मेला वर्ष 2000 से प्रति दो वर्ष के अंतराल पर आयोजित हो रहा है। यह मेले का 12वां वर्ष है। इसमें 8 राज्यों के लगभग 250 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं। यहां रेडीमेड गारमेंट, इलेक्ट्रॉनिक, मोटे अनाज सहित खान-पान के स्टॉल हैं। उन्होंने विंध्य व्यापार मेले के आयोजन के लिए स्थाई भूमि और व्यापारियों के हित में व्यापार संवर्धन बोर्ड के गठन की आवश्यकता बताई। राजधानी भोपाल की तर्ज पर सतना में ग्लोबल स्किल डेवलपमेंट पार्क बनाया जाए, जिससे युवाओं को कौशल विकास के साथ रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर मिले।

कार्यक्रम में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री और सतना जिले के प्रभारी श्री कैलाश विजयवर्गीय, राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, विधायक श्री सुरेंद्र सिंह गहरवार, महापौर सतना श्री योगेश ताम्रकार, चैंबर महामंत्री श्री संदीप जैन, श्री मनोहर अग्रवाल, मेला संयोजक श्री उमेश एवं हरिओम सहित बड़ी संख्या में व्यापारी बंधु उपस्थित थे।

दुग्ध संकलन के साथ किसानों की आय बढ़ाने हो रहे हैं समन्वित प्रयास : पटेल

सुनियोजित रणनीति अपनाते हुए किये जा रहे हैं नवाचार

भोपाल (नप्र)। पशुपालन एवं डेयरी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में हमारी सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने तथा पशुपालकों की आय में वृद्धि एवं किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये निरंतर प्रयास कर रही है। हमारा यह सतत प्रयास रहा है कि पशुपालन को आजीविका का मजबूत आधार

बनाया जाए। श्री पटेल ने बताया कि पिछले 02 वर्षों में प्रदेश ने विकास, सुशासन और जनकल्याण के पथ पर निरंतर प्रगति की है। हमने शासन की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने का संकल्प दृढ़ता से निभाया है। हमारी सरकार ने गौवंश के संरक्षण और संवर्धन को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रदेश में निराश्रित पशुओं के लिए नवीन गौशाला नीति बनाई है। राज्यमंत्री श्री पटेल शनिवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभा हॉल में पशुपालन एवं डेयरी विभाग की दो वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी मीडिया प्रतिनिधियों से साझा कर रहे थे।

गौसंवर्धन- राज्यमंत्री श्री पटेल ने कहा कि गौवंश की संख्या के मामले में मध्यप्रदेश का देश में दूसरा स्थान है। प्रदेश के 1.87 करोड़ गौवंश में से लगभग 70 प्रतिशत गौवंश अवर्णित नस्ल के हैं। शासन द्वारा निराश्रित गौवंश के व्यवस्थापन के लिए लगभग 2500 से अधिक गौशालाओं में 4 लाख 75 हजार से अधिक निराश्रित गौवंश को आश्रय दिया गया है। इसके अतिरिक्त गौशालाओं में निराश्रित गौवंश के व्यवस्थापन हेतु दिए जाने वाले अनुदान की राशि 20 रुपये से बढ़ाकर 40 रूपये प्रतिदिन/गौवंश की गई है। राज्य शासन द्वारा गौशालाओं के अनुदान के बजट को 250 करोड प्रति वर्ष से बढ़ाकर 505 करोड़ कर दिया गया है, जिसमे से 369.02 करोड़ की राशि गौशालाओ को वितरित की जा चुकी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की दूरदर्शिता और संकल्पशक्ति के प्रतिफल से हमारी सरकार ने 'स्वावलंबी गौशालाओं (कामधेनु निवास) की स्थापना नीति 2025' लागू की है। निवेशकों को परियोजनाओं की स्थापना के लिए 5 हजार गौवंश के लिये अधिकतम 130 एकड़ भूमि उपयोग हेतु दी जाएगी। साथ ही प्रत्येक 1000 गौवंश की वृद्धि पर 25 एकड़ दी जा सकेगी। इस योजना में 20 स्वावलम्बी गौशाला की स्थापना हेतु निविदा जारी की गयी, जिसकी अंतिम दिनांक 29 दिसम्बर है।

दुग्ध उत्पादन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मंशा अनुसार देश के दुग्ध उत्पादन में प्रदेश की भागीदारी 09 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने के उददेश्य से अभिनव योजना डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना प्रारंभ की गई है। एक हितग्राही को एक आवेदन पर एक इकाई (25 दुधारू पशु) या एक से अधिक इकाई (अधिकतम 08 इकाईयों, 200 दुधारू पशु) लेने की पात्रता होगी। योजना अंतर्गत देशी नस्ल की गाय की इकाई की लागत 36 रूपये लाख तथा संकर नस्ल की गाय तथा भैंस की इकाई की लागत 42 लाख रूपये है।

मुख्यमंत्री डेयरी प्लस कार्यक्रम के अंतर्गत पशुपालकों के भैसपालन की रूचि के अनुरूप दो दुधारू भैंस उपलब्ध करायी जाती है। पहले इस योजना को मात्र 3 जिलों सीहोर, विदिशा एवं रायसेन जिलों में थी, जिसे वर्ष 2024-25 से पूरे प्रदेश में लागू किया गया है।

सहकारिता के माध्यम से दुग्ध संकलन व प्रसंस्करण- सरकार द्वारा सहकारी प्रणाली और सांची ब्राण्ड को उन्नयन करने के उद्देश्य से एम.पी. स्टेट को-ओपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड तथा संबद्ध दुग्ध संघों के संचालन एवं प्रबंधन के लिए मध्यप्रदेश शासन, एम.पी. स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड एवं संबद्ध दुग्ध संघों तथा राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) के मध्य होने वाले सहकार्यता अनुबंध पर सहमति दी गई तथा सहकार्यता अनुबंध किया गया। हमारा लक्ष्य राज्य में औसत दुग्ध संकलन तीन वर्षों में 33 लाख लीटर प्रतिदिन से अधिक करना। सहकारिता अंतर्गत ग्रामों का कवरेज आगामी 3 वर्षों में बढ़ाकर 15 हजार से अधिक ग्रामों को कवर करना तथा दुग्ध सहकारी समिति सदस्यों की संख्या बढ़ाकर कुल 470 हजार करना। इस हेतु राज्य में 4000 करोड से अधिक का निवेश होगा। दुग्ध संघो द्वारा दूध खरीद मूल्यों में 2.50 रूपये से 8.50 रूपये प्रति लीटर की वृद्धि की गई।

राजगढ़ सबसे ठंडा... पारा 3.8 डिग्री

16 जिलों में घना कोहरा, इस वजह से कई ट्रेनें लेट, पचमढ़ी से ठंडा भोपाल

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में कड़ाके की ठंड का दौर जारी है। शुक्रवार-शनिवार की रात में प्रदेश के कई जिलों में पारे में खासी गिरावट देखने को मिली। भोपाल, नौगांव और उमरिया हिल स्टेशन पचमढ़ी से भी ठंडे रहे।

भोपाल-नौगांव में 4.6 डिग्री और उमरिया में तापमान 4.7 डिग्री दर्ज किया गया, जबकि पचमढ़ी में पारा 4.8 डिग्री रहा। दूसरी ओर, राजगढ़ प्रदेश का सबसे ठंडा शहर रहा। यहां पारा रिकॉर्ड 3.8 डिग्री पर पहुंच गया।

बड़े शहरों में इंदौर में 6.2 डिग्री, ग्वालियर में 6.7 डिग्री, उज्जैन में 7.3 डिग्री और जबलपुर में 7.4 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं, खजुराहो, रीवा, रायसेन, शिवपुरी, दमोह, मंडला, दतिया, सतना, गुना, श्योपुर, धार, रतलाम समेत करीब 25 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे दर्ज किया गया।इधर, 16 से ज्यादा जिलों में कोहरे का असर भी देखा गया। इस वजह से ट्रेनें लेट हो गई।

बालाघाट में आग ताप रहा युवक अलाव में गिरा, मौत

बालाघाट जिले में कड़ाके की ठंड से बचने के लिए आग ताप रहे एक व्यक्ति की अलाव में गिरने से मौत हो गई। घटना शुक्रवार रात 9 बजे लामता थाना क्षेत्र की चरेगांव चौकी के रैयतवाड़ी में हुई। सरोज कुमार अड़मे (40) को जिला अस्पताल लाया गया था, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दतिया।

मुकेश नायक का इस्तीफा ,मीडिया विभाग के ऑर्डर को प्रभारी ने किया था निरस्त

जीतू को भी ट्वीट डिलीट करना पड़ा

भोपाल (नप्र)। एमपी की सत्ता में वापसी के लिए संघर्ष कर रही कांग्रेस के नेता आपस में ही उलझ रहे हैं। कांग्रेस मीडिया विभाग में टैलेंट हंट के लिए जारी हुई लिस्ट पर मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक और मीडिया डिपार्टमेंट के इंचार्ज अभय तिवारी के बीच इतना विवाद बढ़ा कि मीडिया डिपार्टमेंट के अध्यक्ष मुकेश नायक ने पद से ही इस्तीफा दे दिया।

नायक ने इस्तीफे में लिखा- नए लोगों के लिए जगह खाली करना चाहिए- मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने पीसीसी चीफ जीतू पटवारी को भेजे इस्तीफे में लिखा- कल प्रबंध समिति की बैठक में मैंने यह आह्वान किया था कि पुराने लोगों को नए लोगों के लिए स्थान खाली करना चाहिए। मैं स्वेच्छा से अपने पद से इस्तीफा देता हूं। दो वर्ष एक बेहद मेहनती ईमानदार, सक्षम अध्यक्ष के साथ काम करने का अनुभव अच्छा रहा।

मेरी अनन्य शुभकामनाएं।

अब इस्तीफे के पीछे की वजह समझिए- 9 दिसंबर को कांग्रेस के संगठन प्रभारी संजय कामले ने प्रदेश प्रवक्ताओं के चयन के लिए टैलेंट हंट कार्यक्रम के लिए 11 सदस्यीय कमेटी गठित की थी। इस लिस्ट में मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक का नाम ही नहीं था। मीडिया विभाग के प्रभारी अभय तिवारी इस लिस्ट में अध्यक्ष बनाए गए थे।

नायक ने जारी की थी दूसरी लिस्ट- इसके बाद 23 दिसंबर मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने जारी की। इसमें अभय तिवारी को संयोजक और विधायक आरिफ मसूद को सह संयोजक बनाया था। नायक ने टैलेंट हंट के लिए नेताओं को कलस्टर वार जिम्मेदारियां दी थीं।

नायक के पत्र को तिवारी ने किया निरस्त

मुकेश नायक की लिस्ट पर अभय तिवारी ने पत्र जारी कर आपत्ति जताई। तिवारी ने अपने लेटर में लिखा- मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक द्वारा 23 दिसंबर को जारी आदेश सक्षम अनुमोदन और व्यावहारिक शक्ति के अभाव में निरस्त किया जाता है। टैलेंट हंट समिति किसी विभाग के अधीन नहीं अपितु मप्र कांगेस कमेटी के अधीन गठित है। इसके कार्यों का बंटवारा सक्षम प्राधिकारी द्वारा ही अनुमत है।

एमपी कांग्रेस और जीतू पटवारी ने कर दिया था ट्वीट

मुकेश नायक द्वारा जारी की गई टैलेंट हंट की लिस्ट को एमपी कांग्रेस के सोशल मीडिया और पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने ट्वीट कर बधाई दे दी थी। लेकिन, विवाद मचने के बाद एमपी कांग्रेस और जीतू पटवारी ने अपने ट्वीट डिलीट कर दिए।

व्हाट्सएप ग्रुप में हुआ विवाद

मुकेश नायक द्वारा जारी की गई लिस्ट पर अभय तिवारी ने मीडिया डिपार्टमेंट के ऑफिशियल ग्रुप में लिखा- जब संगठन की बर्बादी आती है तो ऐसे परिपक्व आदेश जारी होने लगते हैं। हे प्रभु मप्र कांग्रेस की रक्षा करना। तिवारी ने ग्रुप में ही पीसीसी चीफ जीतू पटवारी को टैग करते हुए लिखा- अध्यक्ष जी कृपया संज्ञान लें, और मुझे मुक्त करें। इसके बाद अभय तिवारी और प्रवक्ता अभिनव बरोलिया को एक व्हाट्सएप ग्रुप से रिमूव कर दिया गया।

भोपाल के टिंबर मार्केट में 48 दिन में 2 बार आग लगी, शिफ्टिंग के लिए 48 कदम भी नहीं बढ़े

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टिंबर मार्केट में हजारों टन लकड़ियों के बीच थिनर और केमिकल रखा हुआ है, जो किसी 'बारूद' के ढेर जैसा है। एक्सपर्ट की माने तो थिनर या केमिकल इतना ज्वलनशील होता है कि पानी डालने के बाद भी नहीं बुझता। यही कारण है कि टिंबर मार्केट में 48 दिन में 2 बड़ी आग लगी। जिससे सबकुछ तबाह हो गया। बावजूद जिम्मेदारों ने कोई सीख नहीं ली। वे आरा मशीनों की शिफ्टिंग के लिए 48 कदम भी नहीं चलें।

शनिवार तड़के फिर बड़ी आग लगने के बाद जिम्मेदार टिंबर मार्केट को जल्द शिफ्ट करने का राग अलाप रहे हैं। दूसरी बड़ी बात तो ये हैं कि टिंबर मार्केट की वजह से मेट्रो का अंडरग्राउंड काम भी अटका है। करीब 20

महीने से कवायद जरूर हो रही। 18 एकड़ जमीन और 5.85 करोड़ रुपए भी दिए जा चुके हैं, लेकिन टिंबर मार्केट की शिफ्टिंग नहीं हो पाई है। कुल 108 में से 43 आरा मशीनें मेट्रो की जद में आ रही है।

भारतीय राग दिमाग, दिल और सांसों को हील करते हैं

भोपाल में हुई शास्त्रों से विज्ञान तक की स्टडी ; गंभीर बीमारियों में भी मिलती है राहत

भोपाल (नप्र)। मॉडर्न युग में पुरानी धरोहरों से जितनी तेजी से दूर होते जा रहे हैं, उतनी ही तेजी से कई शारीरिक और मानसिक समस्याएं सामने आ रही हैं। लेकिन हैरानी की बात यह है कि इन बीमारियों का समाधान रागों (ट्रेडिशनल म्यूजिक) में छिपा है।

एम्स भोपाल के फिजियोलॉजी विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. वरुण मल्होत्रा की समीक्षा आधारित स्टडी ने यह साबित किया है कि भारतीय क्लासिकल राग न सिर्फ मस्तिष्क को शांत और सक्रिय रखते हैं, बल्कि दिल को स्वस्थ, सांसों को संतुलित और तनाव को नियंत्रित करने की क्षमता भी रखते हैं।

अध्ययन में शामिल 28 शोधपत्रों और 6 विशेषज्ञों के सहयोग ने यह बताया कि संगीत, विशेष रूप से राग, हमारे शरीर में ऐसे हार्मोन सक्रिय करते हैं जो दर्द घटाते और मन को संतुलित रखते हैं। यह शोध रागों को केवल कला नहीं, बल्कि विज्ञान आधारित थेरेपी के रूप में सामने रखने का काम करता है।

दिल पर भी दिखते हैं बेहतर रिजल्ट- डॉ. मल्होत्रा बताते हैं कि संगीत सुनते समय दिल की धड़कन (हार्ट रेट) स्वाभाविक रूप से ऊपर-नीचे होती है। यह बदलाव दिल की एक्सरसाइज की तरह काम करता है। यदि पल्स लगातार एक समान रहे तो सडन कार्डियक अरेस्ट का खतरा बढ़ता है, लेकिन संगीत सुनने पर रिदमिक बदलाव दिल को मजबूत बनाते हैं।

राग से होने वाले असर
तनाव घटता है
फोकस बढ़ता है
भावनात्मक संतुलन बनता है
नशा छुड़ाने में मदद मिलती है

न्यूरोलॉजिकल बीमारियों में रिकवरी तेज होती है

राग सिर्फ संगीत नहीं एक विज्ञान है- डॉ. वरुण मल्होत्रा बताते हैं कि राग की मूल परिभाषा ही यह है कि जो मन को आनंद के रंग से भर दे, वही राग है। हर राग का एक व्यक्तित्व होता है, एक प्रभाव होता है। कुछ राग मन को शांत करते हैं, कुछ ऊर्जा बढ़ाते हैं, जबकि कुछ दिमाग के गहरे हिस्सों को सक्रिय कर हीलिंग की प्रक्रिया तेज करते हैं।

राग के स्वर दिमाग के उन हिस्सों को सक्रिय करते हैं जो मूड, हॉर्मोन, याददाश्त, फोकस और दर्द नियंत्रण को संभालते हैं। स्वर कंपन ब्रेन सेल्स में माइक्रो-एक्टिवेशन करते हैं। राग सुनने से एंडॉर्फिन और एनकेफेलिन जैसे प्राकृतिक दर्द-निवारक हार्मोन एक्टिव होते हैं, जो शरीर में हीलिंग की गति तेज कर देते हैं।

एंडॉर्फिन है नैचुरल मूड-लिफ्टर- एंडॉर्फिन हमारे शरीर में बनने वाले प्राकृतिक हॉर्मोन हैं, जो दर्द, तनाव या टेंशन होने पर दिमाग से रिलीज होते हैं। इन्हें शरीर का 'फील-गुड केमिकल' भी कहा जाता है, क्योंकि ये दर्द कम करते हैं, स्ट्रेस घटाते हैं और मूड को खुश रखते हैं।

जब आप एक्सरसाइज करते हैं, हंसते हैं, पसंदीदा खाना खाते हैं, सेक्स करते हैं या मसाज लेते हैं, तब एंडॉर्फिन बढ़ते हैं। यही वजह है कि ऐसी गतिविधियों के बाद मन हल्का और अच्छा महसूस होता है। शरीर को हेल्दी और मानसिक रूप से स्ट्रॉन्ग रखने में एंडॉर्फिन की बड़ी भूमिका होती है।

एनकेफेलिन दर्द भगाने वाला केमिकल- एनकेफेलिन एक प्राकृतिक न्यूरोपेप्टाइड है, जो हमारे दिमाग और नर्वस सिस्टम में बनता है। यह शरीर के अंदर ओपिओइड रिसेप्टर्स से जुड़कर दर्द कम करने में मदद करता है, इसलिए इसे नेचुरल एनाल्जेसिक यानी प्राकृतिक पेनकिलर कहा जाता है।

यह तनाव और भावनाओं को नियंत्रित रखने में भी मदद करता है, जिससे मन शांत रहता है। एनकेफेलिन पांच अमीनो एसिड से बना होता है और मुख्य रूप से ब्रेन में पाया जाता है। जब शरीर दर्द, चोट या तनाव महसूस करता है, तब एनकेफेलिन तुरंत सक्रिय होकर राहत देता है।

न्यूरो सर्जरी में भी बेहतर रिजल्ट- न्यूरोसर्जरी विभाग के डॉ. अमित अग्रवाल की स्टडी में यह पाया गया कि सर्जरी के दौरान और बाद में म्यूजिक सुनने से मरीजों की रिकवरी बेहतर होती है। उनका फोकस, सहयोग और मानसिक स्थिरता बढ़ती है, जिससे उपचार तेज होता है।

मशीन बताती है दिमागी कितना सक्रिय- एम्स में एक विशेष रूसी तकनीक आधारित न्यूरोड्रूचेक मशीन है, जिसकी कीमत लगभग ढाई लाख रुपए है। यह मशीन सिर्फ 5 मिनट में यह बता देती है कि व्यक्ति के दिमाग का कौन सा हिस्सा ज्यादा सक्रिय है, दैनिक ऊर्जा स्तर कब हाई या लो होता है और उसकी सांसों का पैटर्न कैसा है। निजी अस्पतालों में यही टेस्ट 25,000 रुपए तक में होता है, जबकि एम्स में यह मुफ्त है। संगीत सुनने से इस टेस्ट में दिल और दिमाग दोनों में सुधार दर्ज हुआ।

दिग्विजय ने मोदी की फोटो पोस्ट की,एक्स पर लिखा-

नेताओं के चरणों में बैठने वाला सीएम-पीएम बना, ये संगठन शक्ति

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने एक्स पर पीएम मोदी की एक फोटो पोस्ट की। इसमें लिखा-क्यूरा साइट पर मुझे यह चित्र मिला। बहुत ही प्रभावशाली है। किस प्रकार आरएसएस का जमीनी स्वयंसेवक व जनसंघ बीजेपी इंडिया का कार्यकर्ता नेताओं की चरणों में फर्श पर बैठकर प्रदेश का मुख्यमंत्री व देश का प्रधानमंत्री बना। यह संगठन की शक्ति है। ..जय सिया राम। दिग्विजय सिंह द्वारा पोस्ट की गई फोटो में पीएम मोदी पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी के पैरों के पास

बैठे दिख रहे हैं।

दिग्विजय की सफाई- संगठन की शक्ति की तारीफ- दिग्विजय सिंह ने कहा कि मैंने संगठन की तारीफ की है। मैं ऋस्, मोदी जी और उनकी नीतियों का घोर विरोधी हूं। जो मुझे कहना था वो मैंने सीडब्ल्यूसी की मीटिंग में कह दिया।

इससे पहले दिग्विजय सिंह ने मध्य प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में हुई मीटिंग में कांग्रेस में संगठन को मजबूत बनाने के लिए बीजेपी की तर्ज पर काम करने के लिए कहा है। इसके लिए नेताओं को बूथ और जमीन स्तर पर पहुंचने का संदेश दिया।

समकालीन हिंदी कविता 2025

दीपक गिरकर
समीक्षक

जन के संघर्ष, पीड़ा और उम्मीदों की सशक्त अभिव्यक्ति

समकालीन हिंदी कविता की मूल पहचान जनपक्षधरता और सामाजिक बोध है। यह कविता मानव जीवन को उसकी सम्पूर्णता में स्वीकार कर सत्ता, अस्मिता और लोकतंत्र से जुड़े प्रश्नों पर सक्रिय हस्तक्षेप करती है। समकालीन हिंदी कविता अपने समय, समाज और राजनीति से गहराई से जुड़ी आत्मचेतस और जनपक्षधर अभिव्यक्ति है। यह कविता जीवन के अन्तर्विरोधों, संघर्षों और परिवर्तनशील यथार्थ को वास्तविक मनुष्य के अनुभवों के माध्यम से सामने लाती है। स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्शों के जरिए अस्मिता, अधिकार, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को उठाते हुए समकालीन कविता सत्ता, हिंसा और शोषण का प्रतिरोध करती है। 'मैं' से 'हम' की ओर बढ़ती यह कविता आम जन के संघर्ष, पीड़ा और उम्मीदों की सशक्त अभिव्यक्ति है, जो उसे निरंतर जीवंत और गतिशील बनाती है।

इस वर्ष राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित अशोक कुमार पांडेय का कविता संग्रह 'आवाज-बेआवाज' पढ़ा। 'आवाज़-बेआवाज़' की कविताएँ मानवीय और राजनीतिक सरोकारों का सघन संसार रचती हैं। कश्मीर से फिलिस्तीन, प्रेम से व्यर्थताबोध तक फैली ये रचनाएँ समकालीन सत्ता, जनतंत्र और मनुष्यता के संकट को निडरता से उजागर करती हैं, जिनके तीक्ष्ण बिम्ब और आन्तरिक तनाव देर तक स्मृति में बने रहते हैं। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित श्रुति कुशवाहा का कविता संग्रह 'सुख को भी दुख होता है' पढ़ा। श्रुति की कविता जीवन की बुझती आग को संतुलन और करुणा से सुलगाए रखने का प्रयत्न है। वैयक्तिक नैतिकता, आचरणगत परिवर्तन और सूक्ष्म प्रज्ञा में आस्था रखती ये कविताएँ प्रकृति, प्रेम और आत्मसंयम के माध्यम से गहरे मानवीय सत्य उजागर करती हैं, जिनमें वाक-संयम और अन्तःपाठीय संवाद एक विशिष्ट खनक रचते हैं। सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित 'किस-किस से लड़ोग' पंकज चौधरी का नवीन कविता संग्रह है, जिसमें कवि जीवन और समाज के उन पहलुओं को बेबाक़ी से सामने लाते हैं, जिनसे अधिकांश कवि परहेज़ करते हैं या टालते रहे हैं। उनकी कविताएँ साहसपूर्वक वास्तविकता और संघर्ष की गहराइयों में उतरती हैं, यही उनकी अनूठी पहचान है।

सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित युवा कवि वसु गंधर्व का कविता संग्रह 'वीतराग' स्मृति की मोहक आभा लिए हुए है। उनकी रचनाएँ अनंत, प्राचीन अनुभवों और जीवन के सूक्ष्म पक्षों को समेटती हैं, जिसमें संग-साथ और निस्संगता दोनों हैं। भाषा की चमक इन कविताओं की प्रमुख विशेषता है। सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित राजेंद्र टोकी का 'लम्हों की नदी' कविता संग्रह की कविताएँ जीवन के क्षणों और अनुभूतियों को बहते हुए प्रस्तुत कराती हैं। सरल और प्रभावशाली भाषा पाठक को अनुभवों की धारा में डुबो देती है और अपने जीवन के लम्हों को महसूस करने का अवसर देती है। न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन से प्रकाशित विद्या भंडारी के कविता संग्रह 'स्त्री स्लेट पर लिखा शब्द नहीं' की कविताएँ स्त्री-केंद्रित कविताएँ हैं जो जीवन के विविध रंगों और नारी शक्ति का चित्रण करती हैं। हर गोविन्द पुरी का कविता संग्रह 'दो शब्दों के बीच में छूटी हुयी जगह' जीवन और भाषा के सूक्ष्म अन्तरालों की अभिव्यक्ति करता है।

अक्टूबर 2025 में न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित यह संग्रह भाव, संवेदना और मौन के बीच के टूटते-बनते रिश्तों को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है। शिवना प्रकाशन से प्रकाशित पंकज सुबीर का कविता संग्रह 'उम्मीद की तरह लौटना तुम' 109 कविताओं का संवेदनशील संकलन है, जिसमें पिता की स्मृति और उनके जाने का शोक, प्रेम, प्रकृति और सामाजिक भावनाएँ मार्मिक रूप से उभरती हैं। कवि ने पिता-पुत्र के रिश्ते की जटिलताएँ, असहमति, पश्चाताप और प्रेम की गहराई को सहज भाषा में व्यक्त किया है। संग्रह की कविताएँ व्यक्तिगत पीड़ा के साथ-साथ सार्वभौमिक अनुभव का रूप लेती हैं। संग्रह में प्रेम, परिवार, प्रकृति और सामाजिक विडंबनाओं को संवेदनशीलता और कथ्यात्मक सहजता के साथ प्रस्तुत किया गया है। नवल जानी का कविता संग्रह 'अनकही बातें' (बोधि प्रकाशन, जयपुर) प्रेम, सौंदर्य, प्रकृति और जीवन के विविध पक्षों को सरल एवं प्रवाहमयी भाषा में प्रस्तुत करता है। संग्रह में सूक्ष्म भावनाओं और मार्मिक बिंबों का सुंदर प्रयोग है, जो पाठक को सहज ही कविताओं की दुनिया में डुबो देता

है और जीवन के अनुभवों को नए दृष्टिकोण से महसूस कराता है।

सेतु प्रकाशन से प्रकाशित समकालीन हिन्दी कविताओं की प्रमुख हस्ताक्षर स्मिता सिन्हा के कविता संग्रह 'रुंधे कंठ की अभ्यर्थना' स्त्री विमर्श, सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज़ है। संग्रह में स्त्रियों की व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों, प्रेम, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान, पितृसत्ता और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की आवाज़ प्रमुख है। कविताएँ युद्ध, जातिवाद, शहरीकरण, पर्यावरण और बच्चों की संवेदनशीलता जैसे समकालीन मुद्दों को भी उजागर करती हैं। स्मिता की भाषा सरल और प्रवाहमयी है, बिंबों में ताजगी और संवेदनाओं की गहराई है। प्रेम, विरह, संघर्ष और स्मृति की कविताएँ व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वभौमिक रूप देती हैं। यह संग्रह भावनाओं, सोच और सामाजिक चेतना का मिश्रण प्रस्तुत करता है, जो पाठक को सोचने, महसूस करने और संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित करता है। यह हिंदी कविता में स्त्री आवाज़ और सामाजिक जागरूकता का महत्वपूर्ण योगदान है। अंतिका प्रकाशन से प्रकाशित दुर्गा प्रसाद झाला का कविता संग्रह 'समय से जूझता समय' जीवन और समय के बीच के संघर्ष का मार्मिक दस्तावेज़ है। यह संग्रह न केवल व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिबिंब है, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक चिंतन का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। दुर्गाप्रसाद झाला ने कविताओं में समय, मानव मन और जीवन के विविध पहलुओं को इतनी संवेदनशीलता और स्पष्टता के साथ चित्रित किया है कि यह संग्रह हिंदी कविता के समकालीन परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। काव्य प्रकाशन से प्रकाशित चरण सिंह 'अमी' का कविता संग्रह 'डूबते गाँव एवं अन्य कविताएँ' ग्रामीण जीवन की वास्तविकता, मानवीय संवेदनाएँ और समकालीन सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को मार्मिक रूप में प्रस्तुत करता है। यह संग्रह गाँवों के बदलते परिदृश्य और वहाँ के लोगों के संघर्षों को सजीवता और गंभीरता के साथ उकेरता है। इसमें गाँवों के जलते और डूबते यथार्थ, समय की राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक व्यथाएँ, और मानवीय संवेदनाओं की मार्मिक प्रस्तुति मिलती है। हर कविता सीधे पाठक के दिल को छूती है और जीवन की वास्तविक झलक पेश करती है।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित कवि कृष्ण मोहन झा का कविता संग्रह 'तारों की धूल' समकालीन हिंदी कविता की संवेदनशील और सशक्त प्रस्तुति है। यह संग्रह न केवल व्यक्तिगत स्मृतियों और प्रेम की दास्तान कहता है, बल्कि समय, समाज और सत्ता पर स्पष्ट दृष्टि प्रस्तुत करता है। कवि अपने अनुभवों, प्रकृति, मिट्टी और तारों के प्रतीकों के माध्यम से पाठक को भीतर तक झकझोरने वाला काव्य संसार गढ़ते हैं। कृष्णमोहन झा की कविताएं स्मृति जीविता और वर्तमान अनुभव के बीच संतुलन बनाती हैं। वह समाज में शोषण, असमानता और अन्याय के खिलाफ सच बोलते हैं, और पाठक को सवाल पूछने तथा सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रेम, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं का मिश्रण इसे गहन और मननीय काव्य संग्रह बनाता है। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित शांति नायर के कविता संग्रह 'ज्यामिति' आधुनिक हिंदी कविता में सामाजिक जागरूकता, मानवीय संवेदनाएँ और स्त्री-पुरुष संबंधों की यथार्थपरक प्रस्तुति का उत्कृष्ट उदाहरण है। कविताएँ अपने विषय, भाषा और प्रतीकों के माध्यम से पाठक को भीतर तक झकझोरती हैं। प्रमुख कविताएँ जैसे 'जाले', 'ज्यामिति' और 'मुनिवर और इडली' जीवन की असमानताओं, पितृसत्ता और प्रेम-संबंधों के जटिल सच को उद्घाटित करती हैं। यह संकलन केवल कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि सोचने और सवाल करने की प्रेरणा देने वाला काव्य दस्तावेज़ है।

एक कविता

एक और रात दिसम्बर की

राजकुमार कुम्भज

एक और रात दिसम्बर की
है पिछले बरस जैसी ही है बिल्कुल
पृथ्वी पर अन्न-जल की तलाश में
भूख-प्यास की पुकार को पुकारते हुए
भय है कि भयग्रस्तता के मारे हैं सभी
जागते हुए,भागते हुए हाँफते-काँपते
भागती रेलगाड़ी में सवार हैं सभी के सभी
पुल नीचे सूखी नदी ऊपर सुलगता अलाव
सुल्तान की नींद में ख़लल नहीं ज़रा भी
गहन-गहरे सुनहरे सपनों में सोया है वह
खोया है बचपन का जादू मेलों की भीड़ में
पीठ हैं,भेड़ें हैं,ऊन है दूसरों के लिए
बज रही है बाँसुरी भी कि जल रहा है रोम
अभी-अभी सिनेमाघर से निकले हैं लोग
भीतर देखा सभी ने,सभी कुछ गर्म
चर्चा गर्म,गोश्त गर्म,नारे गर्म परदे पर
रम है और राम है और हैं शब्द दो ही
जिन्हें अंग्रेज़ी में लिखकर देखता हूँ मैं
कुछ तो गड़बड़झाला है मोहनदास
सिर्फ़ एक दुकान नहीं है ये महाजन की
बिकती हैं अरावली पर्वतमाला? भी यहीं
मैं उतारना चाहता हूँ छिलके चीज़ों के
फिर भी हैं उम्मीदें कि छूट जाती हैं पीछे
और छूट जाती हैं कई-कई ज़रुरी चीज़ें
रिक्तता में रह जाती हैं रिक्तता संपूर्णतः
फिर व्याकरण और प्याज़ के ही नहीं
उतरता हूँ छिलके ज़रा-ज़रा आग के भी
एक और रात दिसम्बर की.

कविता

पत्थर

नीतीश मिश्र

मौन होने की सजा
सबसे अधिक पत्थर ने भोगी है
कभी पानी ने उसे काटा
तो कभी तुम्हारी छेनी-हथौड़ी ने
लेकिन पत्थरों ने कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा
कभी मूर्ति बनकर
कभी घर की चाकी बनकर
तुम्हारी भूख दूर करते रहे
इस सदी का सबसे ईमानदार प्रहरी
अगर कोई है तो वह है
पत्थर।

गजल

मोहन वर्मा, देवास

जाने वालों को तो,दूर जाना था
अपनी खामियां तो एक बहाना था

अपने पास किसी को क्या मिलता
उनके पास अपना इक ठिकाना था

किस उम्मीद पर हम उनको याद करें
उनका मकसद ही हमें भूल जाना था

अश्कों के समंदर को, कहाँ ले जाते
किसी की याद में तो इन्हें बहाना था

किसी की दुआओं में बने रहें हम,बस
यही खुशी थी अपनी,यही खज़ाना था

कब तलक झूठी उम्मीदों में बने रहें यहाँ
चलते हैं, इक रोज़ तो हमको जाना था....

सोनू सेन्टा क्लॉज बनेगा

लघुकथा

सुरेश सौरभ

पति ने दुरदुराते हुए एकदम टीवी बंद कर दी-'स्अला गोदी मीडिया।'

'क्या हुआ?' अपने काम में लगी पत्नी बोली।

अरे! बिकाऊ मीडिया हो चुका है।

क्या करेंगे आप। मेरा तो टीवी देखने का बिलकुल मन ही नहीं होता।

सही कहा मैं तो कभी-कभी यूँ खोल लेता हूँ।

अरे! हाँ, बाजार जाना है, परसों सोनू के स्कूल में सेंटा क्लॉज़ वाला कोई कंपीटीशन रखा गया है। कई दिन से जिद किए है कि सेंटा वाली ड्रेस चाहिए।

चलो तैयार होता हूँ।

पर।

पर-वर क्या?

अरे! वह लोग, कल पूरे बाजार में नारे लगाते हुए हंगामा कर रहे थे, कह रहे थे,यह तमाशा हमारे धर्म के बिलकुल विपरीत है। कहीं सेंटा क्लॉज की ड्रेस लेने हम गए और वहाँ उन उन्मादी-फसादी लोगों ने हंगामा कर दिया तो?

तभी सोनू स्कूल से आ गया, फौरन वही रट लगा दी, बाजार चलो मम्मी ड्रेस लेनी है सेंटा वाली।

छः साल के सोनू को गोदी में उठाकर लाड़ जताते हुए पापा बोले आज जरूर चलेंगे बेटे।

अब भय मिश्रित हर्ष से पत्नी, पति को एकटक देखने लगी। उसके माथे पर बल आ गया। चेहरे पर विषाद की रेखाएं उभरने लगीं।

अरे! तुम काहे फालतू में चिंता करती हो? मैं इन नफरती चिंटुओं से कतई नहीं डरता?

हो हो हो हा हा हा..ऽ ऽ..सोनू को पिता खुशी से उछलने लगे। बाप बेटे की मस्ती का मंजर, वातावरण को खुशनुमा करने लगा।

पत्नी की आंखों में, बच्चों को हजार-हजार खुशियाँ बांटता, सेंटा क्लॉज़ वाली छवि उभरने लगी।

मन रे, गा

सुरेश उपाध्याय

मन रे, गा
सत्य, अहिंसा, करुणा
प्रेम राग गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
सहिष्णुता, सौहाद्र, सद्भाव
मानव गुण गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
समता, न्याय, शांति
जीवन राग गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
नदी, पेड, पर्वत
प्रकृति गुण गा
गा, रे मन गा

मन रे, गा
ग्राम स्वराज, रोजगार, आत्मनिर्भर
रामराज गा
गा, रे मन गा

व्यंग्य

धर्मपाल महेंद्र जैन
लेखक कनाडा निवासी व्यंग्यकार हैं।

आमरण अनशन करके कौन मरा है!

चमनलाल आज उदास दिखे तो मुझे हैरानी हुई। वरना उनके गाल इतने सूखे रहते थे कि लगता था देश का सारा विकास वहीं जाकर रुक गया था। उन्हें देख कर मेरी सवाल पूछने की हिम्मत इसलिए नहीं होती थी कि कहीं उनकी देशभक्ति छलक न पड़े। आज उनके गालों का रंग कुछ फीका था, तो मैंने बात छेड़ी, कहा, देश चौतरफ़ा विकास कर रहा है। जिसकी देखो उसकी तोंद ट्रिपल इंजिन सरकार जैसी कम से कम तीन दिशाओं में फैल रही है। एक आप हैं कि दुबले होते जा रहे हैं, क्या गड़बड़ है?

वे बोले, हम विपक्ष में हैं। आजकल विपक्ष पराली जैसा हो गया है। जलाओ तो प्रदूषण, न जलाओ तो बदबू। विपक्षी होना किसी अपराध से कम नहीं है। बोलो तो राष्ट्रद्रोह, चुप रहो तो पप्पू और उनके पपीज़ जैसे अनुपयोगी। जितना पैसा लगाया, सब डूब गया। तुम ही कोई नुस्खा बताओ।

मैंने कहा, उपाय तो सरल है। विशाल देश में समस्याओं की कमी नहीं है। कोई भी समस्या उठाइए, चाहे वो राष्ट्रसंघ की हो या पीपल्यापाड़ा की। समझ आती हो या ऊपर से जाती हो। कोई भी एक समस्या उठाइए और आमरण अनशन की घोषणा कर दीजिए।

'तुम्हारा दिमाग अमेरिकन हो गया है क्या, जो ऐसा आत्मघाती विचार दे रहे हो?'

'नहीं तो, मेरा दिमाग़ गमछा हो गया है और चारों तरफ लहरा रहा है। इसीलिए इतना अदद विचार दिया है। आमरण अनशन हमारे लोकतंत्र का सबसे सुरक्षित नाटक है। इसमें मरने का केवल अभिनय होता है। आजकल कोई आमरण अनशन नहीं कर

रहा, आप करेंगे तो छा जाएँगे। टीवी चैनल वाले कैमरे, माइक, एंकर, एक्सपर्ट, सबको लेकर दौड़े चले आएँगे। यह देखने कि इस युग में कौन है जो देश के लिए मर रहा है।

वे घबरा गए, तुम मुझे मरवाना चाहते हो?

मैं हँसा, मरवाना? अरे भाईसाहब, आमरण अनशन से कौन मरता है। यह तो लोकतंत्र में प्रसिद्धि पाने का इंस्टेंट नूडल है। खा-पीकर अनशन पर बैठ जाओ। अब आपके शरीर को भूख नहीं लगेगी, भूख प्रजातंत्र को लगेगी। और, प्रजातंत्र को भूखा देख सैकड़ों छुटभयै लपक पड़ेंगे उसे बचाने। आपके लोग भी गन्ने का रस, ग्लूकोज़, नींबू-पानी पिलाने के लिए अड़े रहेंगे।

वे बोले, लेकिन जनता मुझसे कैसे जुड़ेगी?

मैंने कहा, जनता को बस गांधीजी की फोटो के नीचे दरी पर बैठा एक आदमी चाहिए, ज़मीन से जुड़ा। मुद्दा कोई भी हो-बिजली-पानी, महँगाई, बेरोज़गारी, वोट चोरी, अमेरिकन टैरिफ या घटिया चीनी सामान। जनता को असली नौटंकी करने वाला चाहिए।

वे चिंतित हुए, अगर सच में मेरी हालत बिगड़ गई तो?

मैंने कहा, आपकी हालत बिगड़ने नहीं दी जाएगी। अनशन पर बैठते ही आपका शरीर देश की संपत्ति हो जाएगा। ग्लूकोज़ चढ़ाने वाले से लगा कर आपका बयान प्रसारित करने वाले लोगों की लाइन लग जाएगी। आमरण अनशन करके मरने वालों का कोई आँकड़ा किसी के पास नहीं है।

उनकी आँखों में चमक आ गई। तो क्या माँगें रखूँ?

मैंने कहा, माँग छोटी रखिए। बड़ी माँग रखेंगे तो मुख्यमंत्री लापता हो जाएँगे। माँग ऐसी हो जो शाम की न्यूज बुलेटिन आने के पहले पूरी हो जाए। चार बजते-बजते सरकारी ज़मीर का कार्यालय बंद हो जाता है।

वे बोले, दिन-दहाड़े हो रही चोरियों के खिलाफ बैठ जाऊँ?

मैंने कहा, ना, ना। वे समझेंगे आप वोट चोरी की बात कर रहे हैं। ऐसी चोरी का कोई संज्ञान नहीं लेगा।

वे हताश होकर बोले, तो फिर किस बात पर आमरण अनशन करूँ?

मैंने कहा, जिस बात से ज़िंदा लौट आने की गारंटी हो, वैसा कुछ। जैसे कि जनता के लिए रात-दिन एक करने वाले विधायकों-सासंदों का वेतन-भत्ता बढ़ाने की माँग करो, मुख्यमंत्री के लिए बुलेटप्रूफ कार की मांग करो। विपक्षी लोगों को वाशिंग मशीन में धो कर उनकी पार्टी में रखने की मांग करो।

अंततः वे आमरण अनशन पर बैठ गए। उन्होंने माँग रखी कि विधायक-सांसद निधि चार गुना नहीं की जा सके तो दो गुना अवश्य की जाए ताकि वे लोग अपने क्षेत्र का कुछ विकास कर सकें। सारे सांसद-विधायक उनकी माँग के समर्थन में आ गए हैं। वे ज़मीन पर बैठे हैं और लोकतंत्र उनकी माँग मनवाने में लगा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला साहित्य और टकराहटों का प्रभाववादी दौर

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कला में आधुनिकता कहीं आत्ममुग्धता तो नहीं? यह प्रश्न पूर्व की भांति ही अडिग है पर उससे इतर थोड़ी बात तो की ही जा सकती है। कला जब आधुनिकता की ओर बढ़ रही थी साहित्य के साथ ने उसे मजबूती प्रदान की। आंदोलन हमेशा सहयोग की माँग करता है, सहयोग की भावना यहाँ भी प्रबल थी। आधुनिक चित्रकला को तत्कालीन साहित्य से विलग नहीं माना जा सकता। यहाँ मैं आधुनिक वही कह रहा हूँ जो कला में फिलहाल मान्य है। कलाकार साहित्यकारों से तो साहित्यकार कलाकारों से प्रभावित नज़र आ रहे थे फलतः बदलाव होना ही था और हुआ भी। कलाकारों में स्व के बोध की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही थी। दर्शक के दर्शन और उनके प्रभाव से बेखबर वो अपने स्वतंत्र सृजन पर ध्यान देने में लगे थे। कला धीरे-धीरे सामूहिकता से परे की ओर बढ़ रही थी। कलाकार परिणाम से बेखबर बस काम में लगे रहे। राजा, समाज, समाज के लोग सब के सब अब बौने नजर आने लगे। डर नामक बिमारी को कलाकारों ने जीत लिया था। साहित्य एवं कला की भूमिका समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण है। बिना इसके समाज, समाज नहीं रह जाता या अधूरा ही रहता है। सृजन में पक्ष एवं विपक्ष दोनों होते हैं और मजबूती के साथ खड़े रहते हैं पर हमेशा मजबूत ही हों संशय है। शुरू में कलाएं सत्ता के दबाव में पलीं। पनपीं जरूर पर खुलकर खिल नहीं सकीं। तमाम वादों से भी प्रभावित रहीं। प्रमुख व्यक्तियों के शबीह चित्रों तक सिमट कर रह गई थी कला या फिर फूल-पत्ती, बाग-बगीचों, धर्म के इर्द-गिर्द घूमता रहा कलाकार। समय बीतता गया कलाकार की छटपटाहट ने उसे लगातार झकझोरना जारी रखा। अवस्था असहनीय स्तर तक पहुँच गई। इस बीच समकालीन साहित्य भी प्रभाववाद की बात कर रहा था। मामूली से मामूली विषय, प्रसंग को लेकर साहित्यकार विशेष लेखनशैली से उसको इतना महत्वपूर्ण बना दे रहे थे कि सौंदर्य शब्द-शब्द से झलक उठे। वर्णनात्मक शैली में विशेष लेखन साधारण से साधारण विषय को भी विशेष बना दे रहे थे। साधारणतः दिनचर्या भी लेखनीय जादू के सहारे पाठकों तक अच्छी पैठ बना पाने में सफलता हासिल करने लगी थी। सामान्य भी विशेष बन सकता है के सूत्र के सहारे प्रभाववाद अपने कदम बढ़ा रहा था, शायद यही समय की मांग भी थी, पर आने वाले समय में भी यह मांग जायज मानी जाएगी, संदेहप्रद है। परिवर्तन लगभग रास आने लगी थी, दबी जुबान में ही सही आम पाठकों और दर्शकों के बीच इसकी चर्चा होने लगी थी जबकि अधिकतर आलोचकों का समर्थन उन्हें नहीं मिल रहा था। साहित्यकारों की भांति कलाकारों को भी साधारण से साधारण विषयों, बिखरी पड़ी हुई वस्तुओं, दीन-हीन, निरीह या थके-हारे मनुष्यों को विशेष तरीके से बनानें में आनंद आने लगा। वस्तु चित्रण, जीवन चित्रण सहित लगभग सभी चित्रों में प्रकाश के क्षणिक से क्षणिक पल पर भी काम होने लगा था। प्रकाश के बदलते अवस्था को फलक पर कैद कर लेने की होड़ सी मच गई थी। कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में जाकर विषय के सामने घंटों बैठकर सृजन करता था हालांकि उस पर यथार्थवादी तमगा भी लगाने का प्रयास हुआ पर अंतर स्पष्ट है जो पहले भी था कि यथार्थवादी कृतियों में रंग और रूप में परिवर्तन संभव नहीं था, नपा-तुला संयोजन, सधा हुआ तूलिका संचालन यथार्थवाद की पहचान रही है जबकि यहाँ विषय तो आम होता था पर प्रस्तुति आम नहीं थी। कलाकारों को वस्तु से ज्यादा उसपर तैरता प्रकाश प्रभावित कर रहा था जो वस्तु के रूप से ज्यादा सौंदर्ययुक्त परिवेश को दर्शा रहा था। प्रभाववाद आरोप-प्रत्यारोप के भीषण दौर से गुजरते हुए तपे हुए सोने की भांति अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहा। दुनिया में साधारण कुछ भी नहीं है सब के सब विशेष हैं बस समय और सही कद्रदान सही समय पर मिल जाए। पास को खास नहीं मान सकने वाले पद्धति से बाहर आकर प्रभाववादी कलाकार अपने आस-पास को ही खास नज़र से देखने लगे। टूटी-फूटी, पुरानी बिखरी पड़ी वस्तु भी प्रकाश के प्रभाव से कितनी प्रभावी बन सकती है, प्रभाववादियों ने इसका भरसक भान कराया है। प्रभाववाद में इस पक्ष पर काफी काम हुआ है।

कह सकते हैं कि प्रकाश के विशेष प्रभाव के साथ

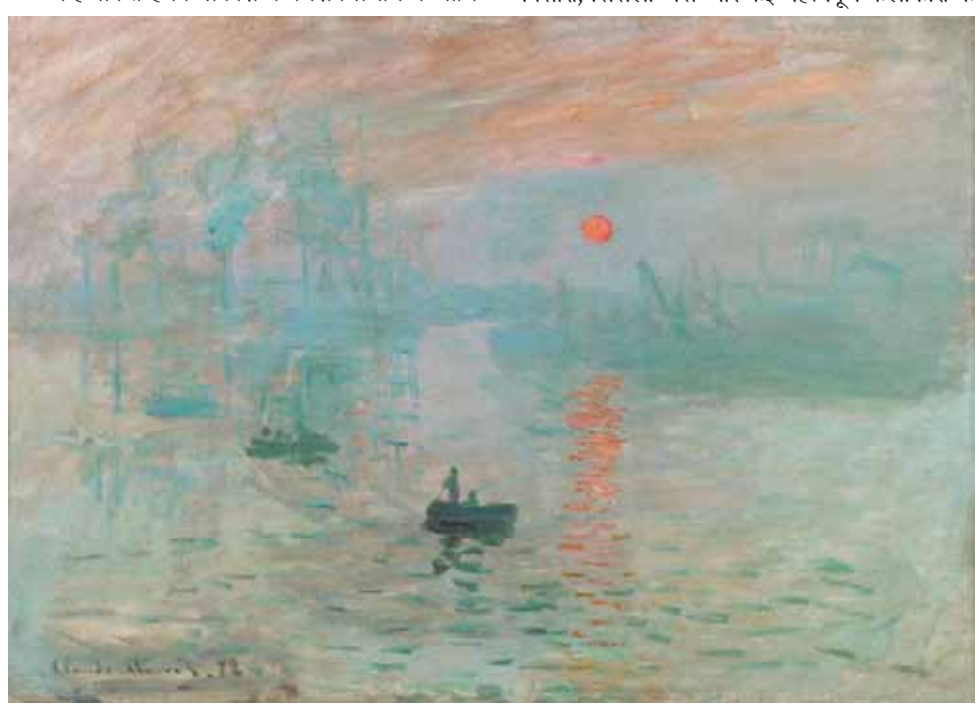

यथार्थवादी कृतियाँ भी प्रभाववादी बन गईं। कहीं-कहीं यथार्थवाद के ही परिवर्तित रुप को प्रभाववाद माना गया है। बात अगर अंतर की हो तो नैसर्गिकता पर नैसर्गिक प्रकाश के प्रभाव के चलते कृतियों को प्रभावी बना देने के साथ ही उसके सौन्दर्य पक्ष को और अधिक प्रबल बना देना ही प्रभाववाद था। वही प्रभाववाद जिसमें कलाकार वैज्ञानिक तरीकों से कृतियों को परिवर्तित करने के प्रयास किए, वही प्रभाववाद जिसके बिना आधुनिक कला को समझ पाना मुश्किल है, जिसका प्रभाव ही रहा कि कलाकार खुल कर अपना आसमान तय करने लगे। वे सभी कलाकार जो आगे चलकर किसी न किसी वाद के जन्मदाता माने गए, खुद को प्रभाववाद से काफी हद तक प्रभावित मानते हैं। प्रभाववाद कई प्रयोगों हेतु जाना जाता है। माने, मोने, पिसारो, सिसली जैसे और कई महत्वपूर्ण कलाकारों के परिश्रम का ही फल प्रभाववाद है। 1863 का समय रहा जब लीक से हटकर काम करने वाले कलाकारों की कृतियाँ प्रदर्शनी हेतु अस्वीकृत कर दी गईं जबकि वे तमाम प्रयोगों और पूर्व के कई विशेष कलाकृतियों के अध्ययन के बल पर आधुनिक कला को मजबूती प्रदान करने हेतु मजबूत बुनियाद बनाने में जुटे हुए थे। कलाकृतियाँ प्रदर्शनी हेतु भेजी तो गईं पर चयन समिति में इस क्रांतिकारी परिवर्तन का कोई असर नहीं पड़ना था, समिति में परंपरागत विचारकों का बोलबाला था, उन्हें तो अपने पूर्व के बनें बनाए ढर्रे पर ही चलना था। परम्परागत मानकों को सम्हालना समिति के लोग खुद का उत्तरदायित्व समझते थे। ऐतिहासिक एवं धार्मिक वो भी बिल्कुल ही सावधानी पूर्वक बनाए गए कृतियों को चुनना उनका लक्ष्य था।

विरोधी विचारों के युद्ध में जीत सत्ताधारियों की हुई। उस वर्ष फ्रेंच राष्ट्रीय कला संस्थान द्वारा लगभग 4000 से भी अधिक चित्रों को अस्वीकृत कर दिया गया। एडवर्ड माने की कृति को दो वस्त्र युक्त पुरुषों के बीच बैठी एक निरावरण महिला के कारण अस्वीकृत होना पड़ा जबकि पूर्व में भी ऐसी कृतियाँ बनती रही थीं और स्वीकृत भी हुईं थी। अमान्य कृतियों को अमान्य कलाकारों ने आपस में ही खूब सराहा। कृतियों पर चर्चा का आयोजन भी किया गया जो प्रभाववाद के ही प्रभाव का प्रतिफल था।

अस्वीकृत कलाकारों में प्रर्दशनी को लेकर रोष साफ दिखने लगा था। जगह-जगह विरोध में प्रदर्शन होने लगे थे। सम्राट नेपोलियन तृतीय जिनकी रूचि भी परंपरागत ही थी, किन्तु विद्रोह जैसे घटनाओं में पारंगत मन में विचार आया कि क्यों न दर्शकों से ही निर्णय करवाया जाय। संवेदनशीलता प्रर्दशित करते हुए उन्होंने अस्वीकृत कृतियों की स्वतंत्र प्रर्दशनी लगाने का आदेश दिया। प्रर्दशनी 'अस्वीकृत चित्रकारों की प्रर्दशनी' नाम से प्रसिद्ध हुई। वर्ष 1863 आधुनिक चित्रकला के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ उससे भी महत्वपूर्ण साबित हुआ नेपोलियन का निर्णय। कुछ चित्रकार अपनी कृतियाँ वापस ले गए जबकि अधिकतर चित्रकारों ने अपने कृतियों को प्रर्दशित करने का निर्णय लिया। कुछ कृतियों को छोड़ अधिकतर उपहास की पात्र बनीं किंतु नियमित दीर्घा की अपेक्षा भीड़ यहाँ ज्यादा रही। आगे चलकर आलोचक लुई के व्यंग्यात्मक लेख में क्लोद मोने के चित्र इंप्रेशन सनराइज हेतु प्रभाववाद शब्द का प्रयोग ही प्रभाववद नाम का कारण बना।

– चित्र साभार गूगल से

इंदल महोत्सव: सांस्कृतिक महापर्व में उमड़ी आस्था

रिपोर्ट

मटली से

डॉ.ब्रह्मदीप अलूने

आदिवासी आस्था,परंपरा और लोकसंस्कृति का भव्य संगम इस वर्ष आदिवासी बाहुल्य बडवानी जिले के मटली में आयोजित तीन दिवसीय इंदल महोत्सव में देखने को मिला। हजारों की संख्या में पहुंचे आदिवासी समुदाय के लोग न केवल इस ऐतिहासिक परंपरा के साक्षी बने, बल्कि उन्होंने अपने सांस्कृतिक नृत्यों, पारंपरिक वेशभूषा और लोकगीतों के माध्यम से अपनी समृद्ध विरासत का शानदार प्रदर्शन भी किया। तीन दिनों तक मटली उत्साह, उमंग, श्रद्धा और लोकनृत्यों की धुनों से सराबोर रहा। ढोल, मांदल,ताशे और पारंपरिक वाद्य जब

गूंजे,तो हर तरफ आनन्द,उल्लास और सांस्कृतिक गौरव की अनुभूति हुई।

इंदल देव की आराधना के साथ प्रारंभ हुए इस महोत्सव में परंपरागत विधि-विधान से पूजा-अर्चना की गई। इसके बाद देश भर से आएं लोकनृत्य प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। महिलाएं पारंपरिक परिधानों में, पुरुष रंग-बिरंगे वेशभूषा और वाद्ययंत्रों के साथ जब मंच पर उतरे तो पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट और लोकधुनों की लय में झूम उठा। यह आयोजन केवल उत्सव नहीं बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने का संकल्प रहा, जिसने नई पीढ़ी को भी अपनी संस्कृति पर गर्व करने का अवसर दिया।

इस वर्ष के इंदल महोत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण रहे,गेड़ी नृत्य,पंडवानी नृत्य, मोनिया नृत्य, मणियारों रास नृत्य,सौंगी मुखौटा नृत्य,निमाड़ी गम्मत,भवई एवं चकरी नृत्य तथा डांडिया रास। राठवा जनजातीय नृत्य,महाकाल नृत्य,हरबोला गायन, मटकी कालबेलिया नृत्य, बधाई नृत्य और गुदुमबाजा गोंड नृत्य। गेड़ी नृत्य ने अपनी रोमांचक प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया,वहीं पंडवानी ने लोककथा,वीरता और सांस्कृतिक गौरव को मंच पर जीवंत कर दिया। सौंगी मुखौटा नृत्य और राठवा जनजातीय नृत्य ने लोकरंगों की विविधता का अद्भुत रूप सामने रखा,जबकि कालबेलिया और डांडिया रास ने उत्साह और उल्लास को चरम पर पहुंचा दिया।

महोत्सव का प्रत्येक क्षण सांस्कृतिक विविधता का परिचायक रहा। मंच पर जहां लोकनृत्य और गायन की श्रृंखला चली,वहीं दर्शक दीर्घा में बैठे ग्रामीण, बुजुर्ग, महिलाएं और युवा बराबर जोश और लगन के साथ जुड़े रहे। महाकाल नृत्य और हरबोला गायन ने आध्यात्मिकता और लोकपरंपरा का अनूठा संगम प्रस्तुत किया। गुदुमबाजा गोंड जनजातीय नृत्य ने जंगलों,प्राकृतिक जीवन और जनजातीय लोकजीवन की झलक प्रस्तुत की।

इंदल महोत्सव आदिवासी समाज के लिए केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि पहचान, आत्मसम्मान और सामाजिक एकता का प्रतीक माना जाता है। यह आयोजन जहां परंपराओं को जीवित रखने का माध्यम बनता है, वहीं युवा पीढ़ी को अपनी लोकसंस्कृति से रूबरू कर आने वाले समय के लिए सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित करने का भी संकल्प दिलाता है। महोत्सव में शामिल बुजुर्गों ने गर्व के साथ बताया कि कैसे वर्षों पुरानी परंपरा आज भी उसी उत्साह और श्रद्धा के साथ निभाई जा रही है।

इंदल महोत्सव का सफल और भव्य आयोजन न केवल मटली क्षेत्र के लिए गौरव का विषय रहा, बल्कि इसने यह संदेश भी दिया कि अपनी परंपराओं को सहेजना ही समाज की वास्तविक समृद्धि है। हजारों आदिवासियों की भागीदारी ने इसे जन-जन का उत्सव बना दिया। अंततः यह कहा जा सकता है कि मटली का इंदल महोत्सव इस वर्ष भी अपनी विशिष्टता, भव्यता और सांस्कृतिक वैभव के साथ स्मरणीय बन गया, जिसे आने वाले वर्षों तक याद किया जाता रहेगा। इंदल उत्सव आदिवासी संस्कृति, आस्था और परंपरा का जीवंत मंच है,जहां जनजातीय कला अपने सम्पूर्ण सौंदर्य और विविधता के साथ प्रकट होती है। यह महोत्सव केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं,बल्कि जनजातीय समुदाय की आत्मा,उनके जीवन दर्शन और सांस्कृतिक गौरव का उत्सव भी है।

इंदल उत्सव के दौरान मंच पर सजी जनजातीय कला प्रकृति,परिश्रम, उत्सवधर्मिता और सामुदायिक एकता की कहानी कहती है। आदिवासी कलाकार जब पारंपरिक वेशभूषा में ढोल, मांदर और गुदुमबाजा की थाप पर नृत्य करते हैं तो उनके हर कदम में इतिहास की स्मृतियाँ, परंपराओं की गूंज और संस्कृति का गौरव झलकता है। मुखौटा नृत्य, कालबेलिया, राठवा और गोंड समुदाय के नृत्य जैसी प्रस्तुतियाँ न केवल मनोरंजन किया बल्कि इनके पीछे छिपी लोककथाओं, देवपूजन, वीरगाथाओं और सामाजिक संदेशों को भी सामने लाने का कार्य किया।

इंदल उत्सव में दिखने वाली कला यह भी सिद्ध करती है कि आदिवासी संस्कृति केवल परंपरा तक सीमित नहीं,बल्कि वह जीवित, गतिशील और रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर है। यह उत्सव कला को सम्मान देता है, कलाकारों को पहचान देता है और समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। इंदल उत्सव जनजातीय कला के उन रंगों का महा-संगम है, जो सांस्कृतिक अस्मिता, गर्व और सामूहिक पहचान को उजागर करते हैं और यह संदेश देते हैं कि अपनी परंपराओं को सहेजना ही किसी समाज की सबसे बड़ी शक्ति है।

माधुरी दीक्षित के अभिनय ने फूँकी इस वेबसिरीज़ में जान

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

मिसेज देशपाण्डे ओटीटी पर रिलीज हो गई । इस क्राइम-थ्रिलर सिरीज़ के कुल छः एपीसोड्स एक साथ रिलीज़ हुए हैं । इस रिलीज़ के साथ ही ग्रे शेड में भी माधुरी छा गई । कहानी को आत्मसात कर माधुरी दीक्षित ने अभिनय में जान झौंक दी और सिरीज़ ऐसी बनी की आपको पलक झपकने का मौका भी नहीं मिलेगा ।

माधुरी दीक्षित को इस बार स्लो बर्नर क्राइम

थ्रिलर सिरीज़ में देखना आपको चौंका सकता है मगर जब आप इस वेबसिरीज़ को देखेंगे तो धक धक करवाने वाली माधुरी दीक्षित आपका दिमाग घुमा देगी । एक सीरियल किलर की भूमिका में माधुरी ने इतनी परफेक्ट अदाकारी की है कि आप प्रशंसा किये बिना नहीं रहेंगे ।माधुरी को अब तक दर्शकों ने रोमाण्टिक, चुलबुली, भोली भाली महिला के रूप में परदे पर देखा है लेकिन इस सिरीज में उनका एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। ग्रे शेड अवतार में माधुरी ने साबित कर दिया है कि उनके अभिनय में काफी रंग हैं। जिस गहराई से उन्होंने अपनी भूमिका को निभाया है, एक भी पल के लिए भी ऐसा नहीं लगता कि हम मिसेज देशपाण्डे को नहीं, बल्कि माधुरी को स्क्रीन पर देख रहे हैं।

इन दिनों ओटीटी की विधा में अडाप्ट करने की होड़ सी मची है, और जियो हॉटस्टार ;इस मामले में काफी आगे है। पहले काजोल के साथ अमेरिकन शो द गुड वाइफ की रीमेक द ट्रायल, फिर रवीना टंडन के साथ अमेरिकन ड्रामा रिवेंज की रीमेक कर्मा कॉलिंग, उसके बाद कोंकणा सेन शर्मा के साथ डैनिश शो द किलिंग की रीमेक सर्च- द नैना मर्डर केस और अब माधुरी दीक्षित के साथ मिसेज देशपांडे, जो 2017 में आई फ्रेंच सीरीज ला मांटे की रीमेक है ।

इस वेबसिरीज़ को नागेश कुकुनूर ने निर्देशित किया है, जिन्होंने इस साल - द हण्ट- द राजीव गाँधी असासिनेशन केस जैसी उमदा सिरीज दी। उनके साथ माधुरी दीक्षित जैसी बेहतरीन अदाकारा की जुगलबन्दी में यह एक विलक्षण वेबसिरीज़ बन सकती थी मगर कुछ अहम् कमियों के चलते दोनों कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाये । एक बढ़िया पटकथा होने के बावजूद, सिरीज़ में रोचक ट्विस्ट और रोमांच की कमी खलती है।

सिरीज़ की कहानी शुरु होती है ऐसे ही मुंबई में एक्टर विराट मल्होत्रा के कत्ल से। पुलिस कमिश्नर अरुण खत्री मौका-ए-वारदात पर पहुंचते हैं। कत्ल करने के तरीके को देखते हुए कमिश्नर की शक की सुई सीधा जाती है हैदराबाद के जेल में कैद सीमा देशपांडे उर्फ मिसेज देशपांडे उर्फ जीनत पर। जीनत पिछले पच्चीस साल से जेल में बन्द मिसेज सीमा देशपाण्डे उर्फ ज़ीनत पर जाता है जिसने इसी क्राईम मोड़ पर पुणें में आठ मर्डर किये थे । ज़ीनत इस मामले में पुलिस की सहायता करना चाहती है। इसके आगे कई मोड़ हैं,कई शक और शुब्हा हैं और अपेक्षित - अनपेक्षित मगर कम आकर्षक या यूँ कहे कि नीरस मोड़ के साथ कहानी चरम की ओर बढ़ती है जो निराश करती है ।

पुलिस कमिश्नर की भूमिका में प्रियांशु चटर्जी इससे पहले भी कई फिल्मों और सिरीज में ऐसी भूमिका निभा चुके हैं अतः यहाँ भी उसका दोहराव हैं । सिद्धार्थ चाँदेकर ,एक गँभीर पुलिसवाले की भूमिका में जो हर हाल में शहर में बुराई फैला रहे अपराधियों को कड़ी सजा दिलवाना चाहता हैऔर वो अपनी पत्नी को भी समय नहीं दे पाता क्योंकि ज्यादातर समय वो अंडरकवर मिशन्स पर ही रहता है काफी जमे हैं । वे इस सिरीज़ के सरप्राइज फैक्टर हैं। उनके अलावा दीक्षा जुनेजा और निमिशा नायर ने भी अपने-अपने भूमिका के प्रति पूरा न्याय किया है ।

वेबसिरीज़ का निर्देशन नागेश कुकुनूर ने किया है जो काफी हद तक पुरअसर है । रोहित जी. बनवलीकर की कहानी भी अच्छी है ? मगर पटकथा कमज़ोर है । कुल मिलाकर, यह वेबसिरीज़ सिर्फ माधुरी दीक्षित के प्रशंसकों के लिए है, लेकिन एक बढ़िया रोमांचक क्राइम थ्रिलर की उम्मीद रखने वालों को यह निराश करती है।

मुद्दा

सत्य प्रकाश नायक

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

एआई का इंडिया: चमकती स्क्रीनें, छूटती ज़िंदगियाँ

एआई आज सिर्फ़ एक तकनीक नहीं रहा। वह हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस तरह घुल चुका है कि अक्सर हमें एहसास भी नहीं होता कि हमारे कितने फैसले अब एल्गोरिदम की सलाह से प्रभावित हो रहे हैं। सुबह का अलार्म कब बजे, रास्ते में कौन-सा गाना बजे, मोबाइल खोलते ही कौन-सा वीडियो हमें रोक ले–यह सब किसी न किसी रूप में एआई दिशा देने लगा है। दफ़्तरों में रिपोर्ट लिखने से लेकर रिज़्यूमे छाँटने तक, और शिक्षा में यह तय करने से लेकर कि किस विद्यार्थी को कौन-सा कंटेंट 'उपयुक्त' माना जाए–एआई अब सोचने की प्रक्रिया के बीच आ चुका है।

लेकिन इसी तेज़ रफ़्तार के बीच एक असहज सवाल उभरता है– क्या भारत का हर नागरिक इस एआई-दुनिया में बराबरी से शामिल है? या फिर हम एक ऐसे देश की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ तकनीक कुछ हाथों में शक्ति बन रही है, और बहुत-से लोग केवल उसके परिणाम झेलने वाले दर्शक बनते जा रहे हैं?

आज का भारत एक गहरा विरोधाभास उजागर करता है। एक तरफ़ शहरों में लोग कुछ सेकंड में एआई से प्रेज़ेंटेशन, रिपोर्ट और कोड तैयार कर रहे हैं। दूसरी तरफ़ ग्रामीण इलाक़ों में लोग अब भी स्थिर इंटरनेट सिग्नल पाने के लिए जगह बदल-बदलकर कोशिश कर रहे हैं।

इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएएमए) और कांतार की इंडिया इंटरनेट रिपोर्ट 2024 बताती है कि जहाँ शहरी भारत में इंटरनेट पहुँच लगभग 72 प्रतिशत तक है, वहीं ग्रामीण भारत में यह 38-40 प्रतिशत के बीच सिमटी हुई है। यह आँकड़ा केवल कनेक्टिविटी की कमी नहीं दर्शाता, बल्कि यह संकेत करता है कि देश की एक बड़ी आबादी डिजिटल भविष्य की तैयारी से ही बाहर रह जा रही है।

जब सरकारें, संस्थान और बाज़ार शिक्षा, रोज़गार, स्वास्थ्य और कल्याण सेवाओं में एआई को तेज़ी से शामिल कर रहे हैं, तब यह डिजिटल अंतर केवल सुविधा का सवाल नहीं रहता। यह धीरे-धीरे अवसर, क्षमता और निर्णय लेने की शक्ति के अंतर में बदलने लगता है।

पहुँच से आगे की असमानता डिजिटल पहुँच को केवल ÷नेटवर्क है या नहीं÷ के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। कई परिवारों में डिजिटल उपकरण और इंटरनेट साझा होते हैं। डेटा की लागत, उपकरण की गुणवत्ता, डिजिटल साक्षरता, भाषा की समझ और साइबर सुरक्षा का ज्ञान–ये सभी मिलकर यह तय करते हैं कि कोई व्यक्ति एआई जैसी तकनीकों से कितना और कैसे जुड़ पाएगा।

इसका अर्थ यह है कि एआई का लाभ केवल इंटरनेट होने से नहीं, बल्कि उसे समझने और नियंत्रित ढंग से उपयोग करने की वास्तविक क्षमता से तय होता है। जहाँ यह क्षमता सीमित है, वहाँ एआई सुविधा से अधिक दबाव और निर्भरता भी पैदा कर सकता है।

डेटा से सीखता एआई – समाज से आता पक्षपात एआई की एक गहरी और अक्सर अनदेखी समस्या यह है कि वह वही सीखता है जो समाज पहले से करता आया है। यदि समाज में किसी समूह के प्रति असमानता या पक्षपात मौजूद है, तो वही पैटर्न डेटा के ज़रिए एआई प्रणालियों में भी पहुँच जाते हैं।

कुछ अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में यह सामने आया है कि चेहरे पहचानने वाली तकनीकों में कुछ वर्गों के लिए सटीकता अधिक रही, जबकि अन्य के लिए गलतियाँ कहीं ज़्यादा पाई गईं। इससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक अपने-आप निष्पक्ष नहीं होती–वह उसी सामाजिक संरचना की छाया होती है जिसमें उसे प्रशिक्षित किया गया है।

भारत जैसे विविध समाज में यह चुनौती और जटिल हो जाती है। यहाँ जाति, भाषा, क्षेत्र, पेशा और सामाजिक हैसियत डिजिटल दुनिया में समान रूप से दर्ज नहीं होतीं। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूर, प्रवासी समुदाय और हाशिये पर खड़े समूह अक्सर डेटा में अदृश्य रह जाते हैं। नतीजतन, एआई आधारित प्रणालियाँ उनके जीवन और ज़रूरतों को समझने में कम सक्षम होती हैं।

निगरानी बनाम सेवा एआई को अक्सर सेवा और सुविधा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यह सवाल भी उतना ही ज़रूरी है कि वह किस हद तक निगरानी का औज़ार बनता जा रहा है। कल्याण योजनाओं, पहचान प्रणालियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में एआई का इस्तेमाल कई बार उन समुदायों पर अधिक सख़्ती से लागू होता है, जिनके पास सवाल पूछने या अपील करने की ताक़त कम होती है। इस असमान शक्ति-संबंध को नज़रअंदाज़ करना तकनीक की सामाजिक भूमिका को अधूरा समझना होगा।

मॉर्फ और डीपफेक- तकनीक का चिंताजनक चेहरा इसी संदर्भ में ÷मॉर्फ÷ और ÷डीपफेक÷ जैसे शब्द केवल तकनीकी शब्द नहीं रह जाते, बल्कि सामाजिक चिंता बन

जाते हैं। मॉर्फिंग में तस्वीरों को इस तरह बदला जाता है कि उनका अर्थ ही बदल जाए, जबकि डीपफेक एआई की मदद से नकली वीडियो या आवाज़ तैयार करता है।

भारत जैसे समाज में, जहाँ व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और पारिवारिक सम्मान गहराई से जुड़े होते हैं, ऐसी डिजिटल छेड़छाड़ के प्रभाव केवल ऑनलाइन नहीं रहते। वे मानसिक, सामाजिक और कानूनी संकट का रूप ले सकते हैं। एआई ने इस चुनौती को इसलिए और गंभीर बना दिया है क्योंकि अब नकली और असली के बीच अंतर करना आम लोगों के लिए आसान नहीं रहा।

शिक्षा- अवसर भी, जोखिम भी शिक्षा के क्षेत्र में एआई दो अलग-अलग परिदृश्य प्रस्तुत करता है। एक ओर, संसाधन-संपन्न क्षेत्रों में विद्यार्थी एआई टूल्स से सीखने, शोध करने और नए कौशल विकसित करने के अवसर पा रहे हैं। दूसरी ओर, सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों में यह तकनीकी अंतर और स्पष्ट होता जा रहा है।

यह अंतर केवल वर्तमान सीख तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आगे चलकर करियर और रोज़गार के अवसरों को भी प्रभावित करता है। इसके अलावा, यदि शिक्षण प्रक्रियाएँ अत्यधिक एआई पर निर्भर हो जाएँ, तो सीखने की गति, शैली और व्यक्तिगत संघर्ष की अहमियत कम हो सकती है–विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें अवधारणाएँ समझने में अधिक समय या अलग तरीकों की आवश्यकता होती है।

एआई और मस्तिष्क- न्यूरोप्लास्टिसिटी का सवाल इस बहस का एक और महत्वपूर्ण पहलू है–मानव मस्तिष्क और उसकी न्यूरोप्लास्टिसिटी। न्यूरोप्लास्टिसिटी वह क्षमता है जिसके ज़रिए मस्तिष्क सोच, अभ्यास और मानसिक चुनौती से नए तंत्रिका संबंध बनाता है।

हाल के अध्ययनों में संकेत मिले हैं कि यदि चैट जीपीटी जैसे एआई टूल्स पर अत्यधिक निर्भरता हो जाए, तो सोचने, लिखने और समस्या सुलझाने के दौरान मस्तिष्क का सक्रिय प्रयास घट सकता है। कुछ शोध यह भी बताते हैं कि एआई की मदद से तैयार किया गया कंटेंट व्यक्ति लंबे समय तक याद नहीं रख पाता, क्योंकि आंतरिक संज्ञानात्मक प्रक्रिया सीमित हो जाती है।

यह चिंता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सीखना केवल सही उत्तर पाने का नाम नहीं, बल्कि प्रश्न करने, गलती करने, धैर्य रखने और आत्म-चिंतन से आगे बढ़ने की प्रक्रिया है। समस्या एआई के उपयोग में नहीं, बल्कि उस स्थिति में है जहाँ एआई सोचने की जगह लेने लगे।

रोज़गार, निर्णय और जवाबदेही रोज़गार के क्षेत्र में एआई नई संभावनाओं के साथ नई चुनौतियाँ भी लेकर आया है। कुछ देशों के प्रारंभिक अनुभव बताते हैं कि भर्ती में उपयोग होने वाले एआई सिस्टम पुराने डेटा के आधार पर निर्णय लेते हैं, जिससे पहले से मौजूद असमानताएँ दोहराई जा सकती हैं।

यहाँ एक बुनियादी सवाल उभरता है–अगर एआई आधारित निर्णय किसी व्यक्ति को नुकसान पहुँचाए, तो जवाबदेह कौन होगा? कंपनी, तकनीक विकसित करने वाला, या वह संस्था जो उसका उपयोग कर रही है? बिना स्पष्ट जवाबदेही के एआई का विस्तार सामाजिक विश्वास को कमजोर कर सकता है।

आगे का रास्ता- समावेशन, अधिकार और एजेंसी एआई पर होने वाली अधिकांश चर्चाओं में एक सवाल अक्सर छूट जाता है–इस तकनीक को डिज़ाइन कौन कर रहा है, और किन अनुभवों के आधार पर आज एआई प्रणालियों को विकसित करने वाली टीमों, डेटा सेट्स और निर्णय ढाँचों में महिलाओं, भाषायी अल्पसंख्यकों और हाशिये के समुदायों की भागीदारी सीमित है। इसका असर केवल प्रतिनिधित्व का नहीं, बल्कि परिणामों का भी है। जब किसी समूह के अनुभव डेटा में पर्याप्त रूप से दर्ज ही नहीं होते, तो एआई आधारित नीतियाँ और सेवाएँ अनजाने में उसी असमानता को दोहराती हैं जिसे वे दूर करने का दावा करती हैं।

इसी के साथ एआई के युग में नागरिक अधिकारों का प्रश्न भी नए सिरे से उभरता है। जब किसी व्यक्ति का मूल्यांकन, पात्रता या प्रोफ़ाइल किसी एल्गोरिदम के ज़रिए तय होने लगे, तो यह जानना ज़रूरी हो जाता है कि उस निर्णय का आधार क्या है, और गलती की स्थिति में जवाबदेह कौन होगा। डेटा की सहमति, निर्णय की व्याख्या का अधिकार और शिकायत निवारण–ये सब एआई शासन के अनिवार्य हिस्से होने चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो तकनीक सुविधा देने के बजाय सत्ता का ऐसा ढाँचा बन सकती है, जहाँ नागरिक उपयोगकर्ता बनकर रह जाएँ।

हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हर व्यक्ति के पास तुरंत उन्नत उपकरण या सस्ता डेटा उपलब्ध हो जाएगा। लेकिन हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि एआई की समझ, उससे जुड़ी सावधानियाँ और सबसे महत्वपूर्ण–स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की मानवीय क्षमता–सबके लिए समान रूप से सुलभ हों।

क्योंकि असली सवाल यह नहीं है कि एआई कितना तेज़ हो गया है, बल्कि यह है कि इस तेज़ी के बीच इंसान अपनी एजेंसी, विवेक और ज़िम्मेदारी को कितना बचा पा रहा है। तभी एआई वास्तव में प्रगति का साधन बनेगा, न कि एक नई असमानता की रेखा।

वाहन चालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

बैतूल। बैतूल स्थित ऑडिटोरियम में वाहन चालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन ने वाहन चालकों को शहर, जिले में सुगम यातायात संचालन, अनुशासित वाहन संचालन, वैधानिक दस्तावेज सहित वाहन के रखरखाव की जानकारी दी। बीमा संबंधी एडवाइजरी जारी करते हुए जिले में सडक़ दुर्घटनाओं में कमी लाने, ब्लैकस्पॉट/एक्सीडेंट जोन एरिया के आसपास के ग्रामीणों को आपातस्थिति में सडक़ दुर्घटना के घायलों को सीपीआर देने एवं घायलों को गोल्डन ऑवर में ट्रामा/हॉस्पीटल पहुँचाने की

महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। पुलिस अधीक्षक ने वाहन चालकों को रहवीर योजना, हिट एंड रन स्कीम, कैशलेस ट्रेटमेंट स्कीम के बारे में भी बताया। शिविर के दौरान नागरिकों को बताया कि दो पहिया वाहन चलाते समय चालक एवं पीछे बैठे व्यक्ति दोनों के लिए हेलमेट पहनना अनिवार्य है। चार पहिया वाहन में यात्रा करते समय सभी व्यक्तियों को सीट बेल्ट लगाना आवश्यक है। नाबालिग व्यक्तियों से वाहन न चलाएँ और न ही उन्हें वाहन चलाने दें। शराब पीकर वाहन न चलाएँ, यह दुर्घटना का मुख्य कारण बनता है। गलत दिशा में वाहन न चलाएँ। नेशनल हाईवे पर मेडियन में अवैध कट बनाकर वाहन न निकालें, यह अत्यंत जोखिमपूर्ण है। ट्रैक्टर-ट्रॉली एवं मालवाहक वाहनों में यात्री परिवहन न करें। वाहन को निर्धारित गति सीमा में ही चलाएँ। किसी भी यात्री या मालवाहक वाहन में ओवरलोडिंग न करें। सडक़ किनारे लगे यातायात संकेतों एवं चिन्हों का अनिवार्य रूप से पालन करें। इस अवसर पर नागरिकों को सुरक्षित एवं जिम्मेदार यातायात व्यवहार अपनाने की शपथ भी दिलाई गई।

अभिमन्यु श्रीवास्तव को पितृ शोक, अंत्येष्टि आज

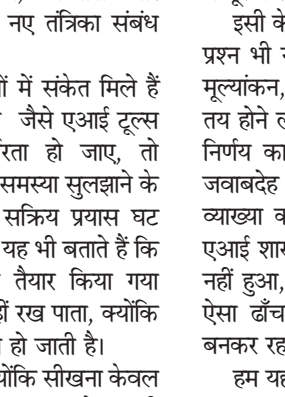

बैतूल। समाजसेवी और एमपी विनियर्स के महाप्रबंधक अभिमन्यु श्रीवास्तव के पिताजी बीएन श्रीवास्तव (लाल साहब) का 90 वर्ष की आयु में आज 27 दिसंबर की दोपहर में देवलोक गमन हो गया है। स्व. श्री श्रीवास्तव वेस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड पाथाखेड़ा से वर्ष 1999 में सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने अपनी सेवा की शुरुआत वर्ष 1964 में वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड से की थी। उनका अंतिम संस्कार रविवार 28 दिसंबर को दोपहर 12 बजे कोठीबाजार मोक्षधाम बैतूल में किया जाएगा। वे अपने पीछे दो पुत्र अरविंद और अभिमन्यु सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए। उनके निधन पर समाजसेवियों, कारोबारियों, जनप्रतिनिधियों और शुभचिंतकों ने शोक व्यक्त कर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने की ईश्वर से कामना की है।

पुलिया से नीचे गिरी बाइक, भाई-बहन घायल

बैतूल। बरेठा घाट के पास शनिवार दोपहर एक दर्दनाक सडक़ हादसा हो गया। अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे गिर गई। हादसे में बाइक सवार भाई-बहन गंभीर रूप से घायल हो गए। युवक के पैर में लोहे की रॉड आर-पार धंस गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार घटना दोपहर करीब 2 बजे की है। ग्राम

कोटमी माल निवासी 29 वर्षीय धर्मेंद्र उइके अपनी बहन पूनम उइके के साथ बाइक से पाढर बाजार की ओर जा रहे थे। वे बाजार में दुकान लगाने के लिए निकले थे, इसी दौरान बरेठा घाट के पास पीछे से आए एक अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को कट मार दी। टक्कर लगते ही बाइक असंतुलित होकर पुलिया से नीचे जा गिरी। हादसा होते ही मौके पर मौजूद राहगीरों ने डायल 112 को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल पहुंचाया गया। जिला अस्पताल में प्राथमिक जांच के दौरान डॉक्टरों ने पाया कि धर्मेंद्र के पैर में लोहे की रॉड आर-पार फंसी हुई है। डॉक्टरों के अनुसार यह गंभीर चोट है, जिसे निकालने के लिए विशेष उपचार की आवश्यकता है।

दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी के दरबार में गुरुभक्तों का ऐसा समागम मानो आस्था का समंदर हिलौरे ले रहा हो...

भव्य और दिव्य स्वरूप में मना गुरु सप्तमी पर्व , दमक उठा श्री मोहनखेड़ा तीर्थ

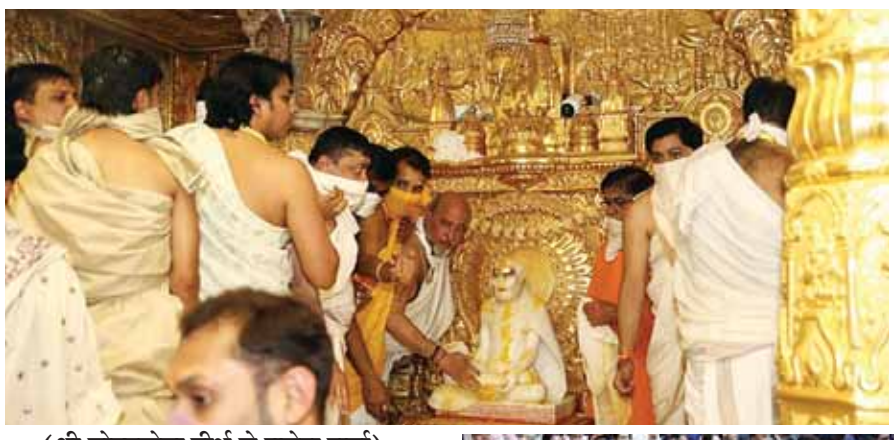

(श्री मोहनखेड़ा तीर्थ से राजेश शर्मा)

देश और दुनिया से हजारों - हजार गुरु भक्तों का सैलाब अपने गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन- वंदन कर अपने को धन्य मान रहा था। जय जय गुरुदेव- दादा गुरुदेव ,जय राजेंद्र के जय घोष की गूंज से गुंजायमान हो उठा था गगन।

गुरुभक्तों की आस्था का यह दिव्य और अनूठा संगम बरसों - बरस याद रहेगा । दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी के दरबार में गुरुभक्तों का ऐसा समागम मानों आस्था का समंदर हिलौरे ले रहा हो। देश- प्रदेश में ही नही अपितु दुनियाभर में विख्यात दादा गुरुदेव के दरबार में 27 दिसम्बर को ऐसा सैलाब उमड़ा कि इस अलौकिक- अनूठे दृश्य को निहारने मानों पुरा मोहनखेड़ा , राजगढ़ और अंचल के गुरुभक्त सड़कों पर थे। श्रीमद विजय राजेंद्र सुरीश्वर जी म.सा. जन्म एवं स्वर्गरोहण दिवस गुरु सप्तमी पर्व भव्य और दिव्य स्वरूप में मना , मानों दमक उठा श्री मोहनखेड़ा तीर्थ और यह पावन धरा।

गुरुदेव के दरबार में आस्था का समंदर , गुरुभक्तों माता- बहनों का अलौकिक- अप्रतिम - अचंभित करने वाला सैलाब - आस्था का यह अनूठा संगम बरसों - बरस याद रहने वाली स्मृतियों में बस गया है। आखिर उत्सव और उल्लास ही तो भारत और भारतीयों की पहचान है और इस में रंग भरते है आस्था के ये अनूठे समंदर.....

लाखों गुरुभक्तों ने गुरुदेव के किए दर्शन वंदन, अल सुबह से देर शाम तक चलता रहा पूजा- अर्चना का दौर

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की पुण्य भूमि पर श्रीमद विजय राजेंद्र सुरीश्वर जी म.सा. जन्म एवं स्वर्गरोहण दिवस पर सुबह से ही दादा गुरुदेव की पूजा-अर्चना का क्रम आरंभ हुआ जो देर शाम तक चलता रहा। सुबह वासक्षेप पूजा के पश्चात मंत्रोच्चार के साथ गुरुदेव का अभिषेक जल और दूध से किया हुआ। उसके पश्चात केशर पूजन का क्रम चलता रहा।

गुरुदेव राजेंद्र सुरीश्वर जी तप और तपस्या से ही विश्व पूज्यनीय हुए - देश और दुनिया भर से आए लाखों श्रद्धालुओ ने गुरु देव के समाधि स्थल पर दर्शन वंदन कर जीवन को निहाल किया। महोत्सव की शुरुआत गुरु गुणावाद सभा के साथ हुई। इस अवसर पर आचार्य श्री हितेशचंद्र सुरीश्वर जी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि यह गुरुदेव की पुण्य भूमि है। यहां की माटी के कण कण में ऊर्जा का वास हैं। उन्होंने उपस्थित गुरुभक्तों से कहा कि वर्ष 2027 में द्वीशताब्दी महोत्सव मनाया जाएगा। जिसकी तैयारियां आरंभ हो गई हैं। मंच से उन्होंने कहा कि त्रिस्तुतिक संघ के सभी आचार्य, मुनि व श्रमणि मंडल द्वी शताब्दी महोत्सव में अपनी सहभागिता प्रदान करेंगे। जिससे यह महोत्सव विशाल पैमाने पर आयोजित होगा। इस अवसर पर मुनि पुष्पेंद्र विजय जी म.सा. ने विचार रखते हुए कहा कि हम सभी भाग्यशाली हैं कि इस पुण्य भूमि की ऊर्जा को प्राप्त कर रहे हैं। गुरुदेव की तप और तपस्या से ही वे विश्व पूज्यनीय हुए है।

खास- खास ..

- 9 केंद्रीय महिला बाल विकास राज्यमंत्री व क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर, क्षेत्रीय विधायक प्रताप ग्रेवाल ने गुरुदेव के दर्शन- वंदन किए ।
- अंतरिक्ष मिशन तथा चंद्रयान 2 मंगलयान व आदित्य के उपकरण बनाने वाले वैज्ञानिक राजमल जैन का बहुमान श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेतांबर ट्रस्ट द्वारा किया गया।
- लाखों गुरुभक्तों ने ग्रहण की प्रसादी

आचार्य श्री हितेशचंद्र सुरीश्वर जी म.सा का मोहनखेड़ा में होगा चातुर्मास

गुरु सप्तमी महोत्सव के दौरान गच्छाधिपति आचार्य श्री हितेशचंद्र सुरीश्वर जी म.सा. के चातुर्मास की घोषणा विध्याचन्द्र सूरी पांडाल में अनेक श्री संघो की उपस्थिति में हुई। देशभर से आए श्री संघो ने आचार्य श्री के चातुर्मास के लिए विनती की जिस पर उन्होंने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आगामी 2026 का चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की। घोषणा के बाद से ही पूरा पांडाल गुरुदेव के जयकारों से गूंज उठा।

// नाम परिवर्तन //

मैं सुरेश शर्मा निवासी एफ-120/12, शिवाजी नगर, भोपाल। यह कि मेरे पासपोर्ट में मेरा नाम सुरेश चंद अंकित हो गया है। जबकि मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम सुरेश शर्मा है। मेरे सभी शासकीय व अशासकीय दस्तावेजों में मेरा नाम सुरेश शर्मा ही दर्ज है तथा मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाता है। आगे भी मेरा सभी शासकीय व अशासकीय दस्तावेजों में सुरेश शर्मा नाम ही अंकित किया जाए व मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए।

शपथग्रहिता
सुरेश शर्मा

शरमन भी चाहते हैं '3 इडियट्स' का सीक्वल बने

'3 इडियट्स' के राजू रस्तोगी यानी शरमन जोशी आज भी इस फिल्म के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सके। फिल्म की रिलीज को 16 साल हो गए, पर वे चाहते हैं कि इसका सीक्वल बनना चाहिए। वे '3 इडियट्स' को अपने करियर की सबसे खास फिल्म मानते हैं। वे खुद को खुशनसीब मानते हैं कि उन्हें इसका हिस्सा बनने का मौका मिला। उन्हें फिल्म से जुड़े कई किस्से भी याद हैं।

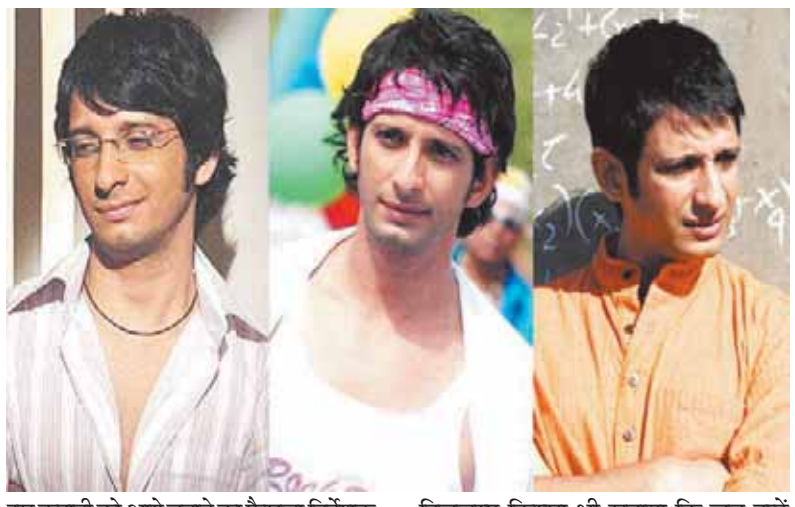

3 इडियट्स' के 16 साल पूरे होने पर फिल्म के सीक्वल की चर्चाएं तेज हैं। इस बीच शरमन जोशी ने '3 इडियट्स-2' पर अपनी चुप्पी तोड़ी और फिल्म से जुड़े यादगार किस्से साझा किए। इसने दर्शकों के दिलों को एक बार फिर छू लिया। राजकुमार हिरानी के निर्देशन में बनी इस सुपरहिट फिल्म को 25 दिसंबर को पूरे 16 साल हो गए। क्रिसमस के दिन रिलीज हुई इस फिल्म ने न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर इतिहास रचा, बल्कि लोगों की सोच, पढ़ाई और जिंदगी को देखने का नजरिया भी बदल दिया। इस बीच आमिर खान, आर. माधवन, शर्मन जोशी और करीना कपूर खान स्टारर इस फिल्म के सीक्वल को लेकर एक बार फिर चर्चाएं तेज होने लगी। हालांकि, अब राजू रस्तोगी का किरदार निभाने वाले एक्टर शर्मन जोशी ने इस पर खुलकर बात की।

शरमन जोशी ने बताया कि वे खुद भी चाहते हैं कि '3 इडियट्स' का अगला पार्ट बने। लेकिन, फिलहाल उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई। सीक्वल की खबरें पहले भी कई बार सामने आई, लेकिन हर बार कुछ और ही निकला। एक बार तो एक विज्ञापन को लोग फिल्म का सीक्वल समझ रहे थे। लेकिन, इस कहानी को आगे बढ़ाने का फैसला निर्देशक राजकुमार हिरानी, लेखक अभिजीत जोशी और आमिर खान ही कर सकते है। फिल्म के 16 साल पूरे होने पर शरमन ने भावुक होकर कहा कि '3 इडियट्स' उनके करियर की सबसे खास फिल्मों में से एक है। वे खुद को खुशनसीब मानते हैं कि उन्हें इसका हिस्सा बनने का मौका मिला।

इसके अलावा उन्होंने हंसते हुए एक दिलचस्प किस्सा भी सुनाया कि जब उन्हें फिल्म के लिए फाइनल कॉल आया, तब वह जिम में सिक्स पैक बनाने में लगे थे। तभी राजकुमार हिरानी ने उनसे कहा था कि अब अगले तीन साल तक जिम की शक्ल मत देखना। यह सुनकर शरमन आज भी मुस्कुरा देते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राजकुमार हिरानी ने उन्हें फिल्म स्टाइल (2001) में देखा था और तय कर लिया था कि भविष्य में किसी फिल्म में उन्हें जरूर कास्ट करेंगे। बाद में वही मौका '3 इडियट्स' के रूप में सामने आया।

फिल्म में जब शरमन का किरदार आत्महत्या की कोशिश करता है, इस सीन को लेकर शरमन ने बताया कि शुरुआत में सिर्फ उनके एक्सप्रेशन से बात नहीं बन पा रही थी। तब हिरानी सर ने इसमें परिवार के शॉट्स और दीये के गिरने वाला सीन एड किया, जिससे इसका असर कई गुना बढ़ गया। शरमन ने बताया कि कई लोग उनके माता-पिता को फोन करके पूछते थे कि वह ठीक तो हैं! इतना ही नहीं, प्रीमियर के समय उनकी छोटी बेटी भी उस सीन को देखकर रो पड़ी थी, तब तक शांत नहीं हुई, जब तक शरमन ने उसे गोद में नहीं ले लिया।

अजय देवगन की फिल्म में नहीं दिखेंगे 'धुरंधर'

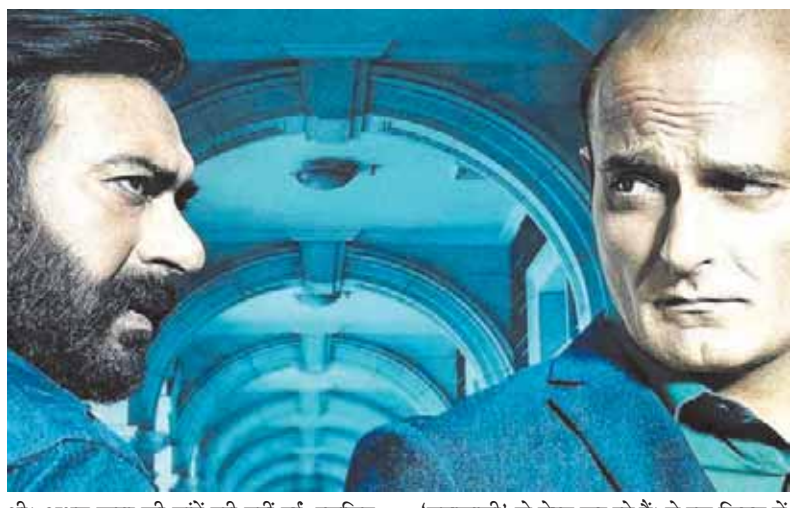

दृश्यम 3' के मेकर्स ने घोषणा की कि उनकी फिल्म 2 अक्टूबर, 2026 को रिलीज होगी। इसके लीड एक्टर्स अजय देवगन, तब्बू, श्रिया सरन और रजत कपूर के नाम भी इसमें शामिल थे। अक्षय खन्ना का नाम गायब था, जिससे लोगों की भौंहें तन गईं। 'धुरंधर' के बाद अक्षय खन्ना काफी सफल रहे हैं, इसलिए फैंस उन्हें 'दृश्यम' के अगले पार्ट में देखने के लिए एक्साइटेड थे, खासकर तब जब उन्होंने 'दृश्यम 2' (2022) में शानदार परफॉर्म किया था। इसी बीच, खबरें आईं कि उन्होंने फीस को लेकर मतभेद के कारण तीसरे पार्ट से किनारा कर लिया है।

उन्होंने अक्षय को समझाने की कोशिश की कि इतनी बड़ी रकम देने से फिल्म का बजट बढ़ जाएगा। लेकिन, अक्षय खन्ना को लगा कि उनकी मांग जायज है। उन्हें पता था कि अब अक्षय की मौजूदगी से फिल्म के प्रति दर्शकों का उत्साह काफी बढ़ जाता है। इसी बीच, यह भी बताया गया कि अक्षय खन्ना और फिल्ममेकर्स के बीच कुछ और मुद्दों पर भी मतभेद थे। उनमें से एक यह था कि अक्षय ने विग पहनने का सुझाव दिया था। फिल्ममेकर्स को यह बात पसंद नहीं आई, शायद इसलिए क्योंकि दूसरे पार्ट में उन्होंने विग नहीं पहनी थी। अक्षय खन्ना की मांगें पूरी नहीं हुईं, इसलिए उन्होंने 'दृश्यम 3' से बाहर निकलने का फैसला किया। बेशक, उन्होंने फिल्ममेकर्स को शुभकामनाएं दीं। यह अलगाव अच्छे ढंग से हुआ और फिल्म निर्माता भविष्य में अक्षय के साथ काम करने की उम्मीद करते हैं जब दोनों के विचार एक जैसे होंगे। अक्षय खन्ना अपनी तेलुगू फिल्म 'महाकाली' से डेब्यू कर रहे हैं। वे इस फिल्म में असुरगुरु शुक्राचार्य का किरदार निभाएंगे। इस फिल्म की कहानी 'हनुमान' के लिए मशहूर प्रशांत वर्मा ने लिखी है और इसका निर्देशन पूजा अपर्णा कोल्लुरु ने किया है। 'महाकाली' एक सुपरहीरो फिल्म है जिसमें भूमि शेट्टी देवी काली का किरदार निभाएंगी।

रियल बॉक्स

'धुरंधर' के धमाके से निकला अनोखा अक्षय

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी अभिनेता के हाथ अचानक कोई ऐसी भूमिका आती है, जो उसके पूरे करियर को नए सिरे से परिभाषित कर देती है। स्पाई-एक्शन थ्रिलर 'धुरंधर' में अक्षय खन्ना के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। आदित्य धर के निर्देशन में बनी यह फिल्म न केवल बॉक्स ऑफिस पर तूफान लाई, बल्कि इसने ऐसी मिसाल बनाई जो साबित करती है, कि सही वक्त पर, सही किरदार, सही अभिनेता के हाथों में पहुंच जाए तो फिल्म का भाग्य बदल जाता है। रणवीर सिंह के फिल्म का हीरो होते हुए अक्षय खन्ना का रहमान डकैत का नकारात्मक किरदार पूरी फिल्म पर हावी है। यह ऐसी घटना है, जो बॉलीवुड के विलेन-केंद्रित अभिनय के एक नए युग की शुरुआत लगती है। फिल्म में अक्षय खन्ना की रहमान डकैत की भूमिका को कालजयी कहने का कारण यह है, कि यह ऐसा किरदार है जो समय की परतों को भेदकर दर्शकों के मन में जगह बनाता है। बॉलीवुड में अभी तक के यादगार विलेन के किरदारों को देखें तो सभी में एक विशेष गुण है कि वे मनोविज्ञान और आचरण से एक आभामंडल रचते हैं। अक्षय खन्ना का रहमान डकैत का किरदार भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है। लेकिन, अपने समकालीन तरीके से।

यह किरदार केवल अपराधी नहीं, ऐसा चरित्र है जिसमें चमक है, आकर्षण है और अंधकार भी। जो हर पल सतह के करीब रहता है। अक्षय ने इन सभी परतों को इतनी निपुणता से निभाया कि दर्शक रहमान को समझ तो सकते हैं, लेकिन उसे माफ नहीं कर सकते। यह एक जटिल भूमिका थी और अक्षय ने उसे तन्मयता से निभाया। 'धुरंधर' की सफलता और अक्षय खन्ना की नकारात्मक भूमिका का सराहा जाना, यह सब मिलकर संदेश देते हैं कि सिनेमा केवल लीड रोल तक सीमित नहीं है। असल कलाकार किसी भी भूमिका से अपनी पहचान बना सकता है। 'धुरंधर' का यह धमाका दिखाता है, कि फिल्म इंडस्ट्री में सफलता केवल बड़े नामों से नहीं, बल्कि सही किरदार, सही निर्देशन और सही अभिनेता के संयोग से मिलती है। अक्षय खन्ना, जो दो दशकों तक एक प्रतिभाशाली लेकिन अपरिचित अभिनेता रहे, वे अब नकारात्मक किरदार के नए आइकन बन गए। उनकी यह अभिनय यात्रा न केवल व्यक्तिगत सफलता है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक संदेश भी देती है कि सफलता की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। कोई अभिनेता कभी भी, किसी भी भूमिका में अपनी पहचान बना सकता है।

अक्षय खन्ना 28 साल की मेहनत के बाद एक ऐसे मंच पर पहुंचे, जहां उन्हें न केवल पहचान मिली, बल्कि एक नए युग की नींव भी रखी गई। यही है विलेन केंद्रित अभिनय का नया युग। इस फिल्म में विलेन के किरदार को अक्षय खन्ना के पुनर्जन्म की तरह समझा जा सकता है। लेकिन, इसे समझने के लिए उनके लंबे लेकिन अदृश्य रहे करियर को समझना भी जरूरी है। फिल्म परिवार का सदस्य होते हुए भी उन्हें विनोद खन्ना के बेटे जैसा स्टारडम कभी नहीं मिला। 1997 में 'हिमालय पुत्र' से करियर की शुरुआत करने वाले अक्षय ने जेपी दत्ता की फिल्म 'बॉर्डर' में फौजी की भूमिका निभाई। फिल्म तो ब्लॉकबस्टर साबित हुई, पर बॉर्डर की सफलता उन्हें स्टारडम नहीं दे सकी। इसके बाद 40 से अधिक फिल्मों में काम करने के बाद भी वे हमेशा एक सलीकेदार, प्रतिभाशाली लेकिन अदृश्य अभिनेता बने रहे। सिनेमाघर से बाहर निकलने वाले दर्शकों को वे कभी याद नहीं रहे। हंगामा (2003) में उनका कॉमेडी रोल कालजयी माना जाता है, जहां उन्होंने 'जीतू वीडियोकॉन' की भूमिका में हास्य की ऐसी परिभाषा दी, जिसे दर्शक आज भी उन्हें इसी किरदार से पहचानते हैं। ताल, हलचल और 'दृश्यम-2' जैसी फिल्मों में भी उन्होंने शानदार अभिनय किया। लेकिन, कहीं न कहीं पॉजिटिव भूमिकाएं उन्हें स्थापित हीरो नहीं बना सकी। ढाई दशक से ज्यादा कड़ी मेहनत करने के बाद भी अक्षय खन्ना प्रतिभाशाली अभिनेता के रूप में जाने जाते रहे, सुपरस्टार कभी नहीं बने।

अक्षय खन्ना के अभिनय को समझना एक तरह से आधुनिक नाटकीय अभिनय के सूक्ष्मताओं को समझना है। वे ऐसे अभिनेता हैं, जो बहुत कम बोलते हैं, लेकिन जब बोलते हैं तो हर शब्द में वजन होता है। उनकी आंखों की भाषा, उनके चेहरे की सूक्ष्म अभिव्यक्ति और बॉडी लैंग्वेज ये सब मिलकर एक पूरा किरदार रचते हैं। 'धुरंधर' के रहमान डकैत के रोल में अक्षय इसे नई ऊंचाई पर ले गए। अक्षय का यह किरदार सिर्फ एक अभिनय नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक घटना बन गया। 'हंगामा' में उनका हल्का-फुल्का रूप और 'धुरंधर' में उनकी खतरनाक भूमिका अक्षय के अभिनय की विविधता को समझाती हैं। यह ऐसा बदलाव है, जो दर्शकों को विश्वास दिलाता है, कि सिनेमा केवल अभिनय नहीं, बल्कि परिवर्तन की अनोखी कला है। यह तथ्य सबसे अधिक दिलचस्प है, कि रणवीर सिंह जो फिल्म के हीरो हैं, अक्षय के किरदार से पूरी तरह ओवरशैडो हो गए। यह असामान्य घटना फिल्म इंडस्ट्री में कभी-कभार घटती है। लेकिन, 'धुरंधर' में यह स्पष्ट दिखाई दी। रणवीर एक प्रतिष्ठित अभिनेता हैं, लेकिन अक्षय की उपस्थिति इतनी प्रभावशाली है कि हर दृश्य में वे फिल्म को अपने नाम कर लेते हैं। यह एक अलग किस्म की ताकत है, न कि नायकत्व की, न हिंसा की, बल्कि अभिनय की शक्ति की। अक्षय खन्ना की यह वापसी एक नया मानदंड स्थापित करती है। अब यह साफ है कि यदि कोई निर्माता अपनी फिल्म के लिए खूबसूरत चेहरे वाला विलेन चाहता है, तो अक्षय खन्ना उसकी पहली पसंद होंगे।

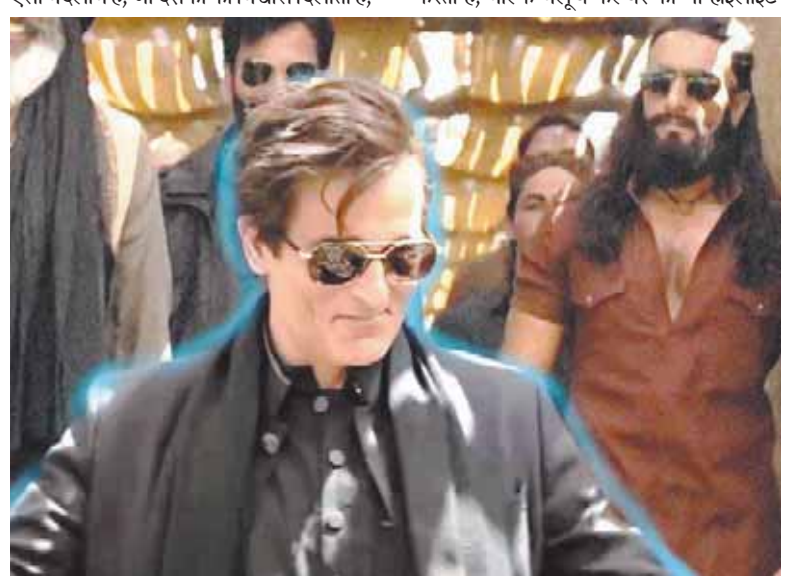

अक्षय खन्ना के लिए 2025 का साल अभिनय जीवन का बदलाव वाला दौर रहा। इस साल आई दो फिल्मों के नकारात्मक किरदार ने सब कुछ बदल दिया। पहले आई फिल्म 'छावा' में अक्षय ने औरंगजेब का जो किरदार निभाया, उसे जबरदस्त सराहा गया। लेकिन, 'धुरंधर' में अक्षय खन्ना के रहमान डकैत के किरदार ऐसा चमत्कार किया, जिसने विलेन के नए मानदंड स्थापित कर दिए। पाकिस्तानी अंडरवर्ल्ड के इस खतरनाक डकैत को अक्षय ने इस तरह जीवंत किया, मानो वह अभिनय नहीं, सच्चाई को परदे पर उतार रहे हों। उनके किरदार रहमान का सबसे खास पहचान है शांति और ठंडक। फिल्म में यह किरदार ऐसा विलेन नहीं है, जो चीखता-चिल्लाता है, बल्कि एक ऐसा पात्र है, जो खामोशी में मौत बिखेरता है। उसकी आंखों में जो खामोशी है, जो किसी भी संवाद को बेमानी कर देती है। अक्षय ने अपनी अदाकारी से दिखा दिया कि दमदार एक्टिंग के लिए चीखना-चिल्लाना जरूरी नहीं। उनकी खामोशी में भी इतना वजन था कि हर दृश्य खास हो गया।

'धुरंधर' की जिस बात ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया, वह है अक्षय का वह अनोखा सीन जिसमें वे 'फसला' नामक अरबी गाने पर डांस करते हैं। यह गाना बहरीनी डीजे सिंगर ईप फराजी ने 2022 में बनाया गया था। लेकिन, 'धुरंधर' में इसका उपयोग एक खास सीन में किया गया है। इसमें अक्षय की एंट्री इतनी शानदार है, कि वे दर्शकों के दिल पर छा गए। सोशल मीडिया पर इस सीन की तुलना 'एनिमल' के 'जमाल कुडू' गाने से की जाने लगी। क्योंकि, दोनों ही गानों में विलेन की एंट्री यादगार है। यह सीन सिर्फ एक डांस वाला दृश्य नहीं, इसमें अक्षय के किरदार की पूरी ऊर्जा है, जो उनको एक ही फ्रेम में सेलुलॉइड पर कैद कर देता है। फिल्म का यह गाना अक्षय खन्ना की एंट्री का हाइलाइट है, जो बलूच वॉर डांस से प्रेरित है। यह इम्प्रोवाइज्ड डांस एक टेक में शूट हुआ, जहां अक्षय खन्ना ने खुद ही नए स्टेप्स जोड़े। कोरियोग्राफर विजय गांगुली के मुताबिक, यह सीन लास्ट मिनट का था, लेकिन अक्षय खन्ना का जोश में आने से यह आइकॉनिक बन गया। सोशल मीडिया पर वायरल होने से गाना हिट हो गया, जिसने फिल्म की मार्केटिंग को भी आसमान पर पहुंचा दिया। यह डांस न सिर्फ दर्शकों को रोमांचित करता है, बल्कि बलूच कल्चर को भी हाईलाइट करता है।

फिल्म में अक्षय की विलेन की भूमिका प्रभावशाली और सफल प्रयोग कहा जा सकता है। लेकिन, करियर में विलेन भूमिकाओं का उनका पहला रोल नहीं है। अक्षय ने अभी तक 6 फिल्मों में ऐसी भूमिकाएं निभाई और हर बार उन्होंने दर्शकों को प्रभावित किया। 2002 में आई फिल्म 'हमराज' में भी उन्होंने विलेन की भूमिका निभाई। इसी साल आई 'दीवानगी' में भी उन्होंने नकारात्मक किरदार में अच्छा प्रदर्शन किया। 2008 की 'रेस' में अभय देओल के साथ रोमांचक दृश्य बनाने वाले अक्षय का विलेन रोल भी कमाल का था। 2016 में 'दिशूम' में भी उन्होंने इसी तरह का रोल किया। लेकिन, 2025 में 'छावा' और 'धुरंधर' ने एक नया दौर शुरू किया। 'छावा' में औरंगजेब की भूमिका करके पूरी इंडस्ट्री को दिखा दिया कि वे अपने अभिनय में पलट भी सकते हैं। लेकिन, 'धुरंधर' में अक्षय के रहमान डकैत ने तो इतिहास रच दिया। वो सिर्फ विलेन नहीं, ऐसा किरदार है, जो बॉबी देओल और संजय दत्त जैसे दिग्गज विलेन अभिनेताओं के लिए खतरा बन गया।

बॉक्स ऑफिस के नजरिए से भी 'धुरंधर' की सफलता की कहानी भी असाधारण है। फिल्म ने 5 दिसंबर को अपनी रिलीज के दिन ही 28 करोड़ की कमाई की, जो रणवीर सिंह के करियर की सबसे बड़ी ओपनिंग थी। पहले सोमवार को फिल्म ने 23.25 करोड़ की कमाई की, जो दर्शकों में फिल्म की मजबूत पकड़ दिखाता है। शुरू के पांच दिनों में इस फिल्म ने देशभर में 150 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन करके अपना बजट 280 करोड़ को पार करने की ओर तेजी से बढ़ गई। सातवें दिन तक यह आंकड़ा 200 करोड़ को पार कर चुका था और दसवें दिन फिल्म ने 351.75 करोड़ का घरेलू कलेक्शन हासिल कर लिया। जबकि दुनिया में इस फिल्म ने 530.75 करोड़ तक पहुंच बना ली। यह सफलता किसी बड़े सितारे की की नहीं, बल्कि दमदार कहानी, जांबाज अभिनय और दर्शकों की माउथ पब्लिसिटी पर आधारित है। लेकिन, फिल्म की सफलता की जो भी कहानी है, वो अक्षय खन्ना से शुरू होकर उन्हीं पर खत्म भी होती है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

पर्यटक ही नहीं फिल्मकार भी भागते हैं गोवा की तरफ

अशोक जोशी

क्रिसमस और नया साल आते ही देशभर के पर्यटक और शौकीन लोग अपना बोरिया बिस्तर बांधकर गोवा का रूख करने लगते हैं। वैसे तो पर्यटकों के बीच गोवा साल भर ही चर्चित रहता है। जहां तक गोवा की राजनीतिक

और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सवाल है पुर्तगालियों ने इसे अपना उपनिवेश बनाया और भारत की आजादी के बरसों बाद उन्होने यहां से अपना आधिपत्य छोड़ा। फिल्म कलाकारों ने भी गोवा की खूबसूरती को लोकप्रिय बनाने में अपना योगदान दिया जिसके परिणामस्वरूप 19 दिसम्बर 1961 को गोवा आजाद हुआ। तब से लेकर अब तक गोवा और उसके आसपास की दृश्यावली कई फिल्मों में दिखाई दी।

वैसे गोवा की आजादी को लेकर कोई खास फिल्में नहीं बनी। लेकिन, जितनी भी फिल्में बनी उन्होने दर्शकों पर प्रभाव जरूर छोडा है। गोवा की आजादी को लेकर सबसे पहले हंसोड अभिनेता निर्माता निर्देशक आईएस जौहर ने 1965 में 'जौहर महमूद इन गोवा' का निर्माण किया था। इस फिल्म के प्रति जौहर कितने गंभीर से इसका पता इसी तथ्य से चलता है कि उन्होने इसका प्रदर्शन 1 अप्रैल 1965 को किया। लेकिन इस फिल्म ने आईएस जौहर की लॉटरी लगा दी। जौहर, महमूद, सोनिया साहनी, सिमी ग्रेवाल और कमल कपूर अभिनीत यह फिल्म अपने गानां के कारण जमकर चली। कल्याणजी-आनंदजी ने इस फिल्म के लिए यह दो दीवाने दिल के, अंखियो का नूर है तू और धीरे रे चलो मोरी बांकी हिरनिया जैसे कर्णप्रिय गीतों की रचना की थी।

गोवा स्वतंत्रता संग्राम पर दूसरी फिल्म थी 1983 में प्रदर्शित पुकार। अमिताभ बच्चन, टीना मुनीम, जीनत अमान, रणधीर कपूर, प्रेम चौपडा, श्रीराम लागू अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन रमेश बहल ने किया था। इस फिल्म की कहानी के अनुसार आजादी से पहले गोवा में क्रांतिकारियों का एक समूह पुर्तगाल से आजादी के लिए लडता है। यह फिल्म अपने कथानक के बजाए समंदर में नहा कर और भी रंगीन हो गई हो जैसे गरमा-गरम फिल्म के कारण बॉक्स आफिस पर सफल हुई थी। इसके बाद गोवा के स्वतंत्रता संग्राम पर कोई उल्लेखनीय फिल्म तो नही बन पायी, लेकिन गोवा की लोकशन पर कई फिल्में बनने लगी। जिनमें गोवा के मंदिरां और चर्चों से लेकर समुद्री तट का भरपूर दोहन हुआ है।

कोंकण के होने के कारण गुरूदत्त को गोवा की लोकेशन्स खूब लुभाती थी। गोवा की पृष्ठभूमि पर

गुरूदत्त ने क्राइम फिल्म जाल का निर्माण किया था। देव आनंद और गीता बाली अभिनीत इस सफल फिल्म के गीत ये रात ये चांदनी फिर कहां और चोरी चोरी मेरी गली आना है बुरा आज भी सुने जाते हैं। गोवा में फिल्मायी गई फिल्मों में रति अग्निहोत्री और कमल हासन अभिनीत एक दुजे के लिए बेहद सफल हुई थी। ओल्ड पेट्रो ब्रिज ए डोना पाउला चेट्टी ए शांतादुर्गा मंदिर और हार्वालेम वाटर फाल्स की सुंदर लोकेशन पर फिल्माए दृश्यों को दर्शकों ने बेहद पसंद किया ।

संजय लीला भंसाली को गोवा की लोकेशन्स कुछ ज्यादा ही अच्छी लगती है। सलमान, मनीषा कोईराला और नाना पाटेकर जैसे कलाकारों को लेकर उन्होने 'खामोशी = द म्यूजिकल' का निर्माण किया। इस फिल्म में दर्शकों ने ओल्ड गोवा, अंजुना बीच, सालिगाव चर्च और रिवर क्रूज के दृश्यों का भरपूर आनंद लेते हुए मधुर संगीत का आनदं उठाया। इसके बाद संजय लीला भंसाली ने गोवा की पृष्ठभूमि लेकर खुबसूरत फिल्म 'गुजारिश' का निर्माण किया जिसमें ऋतिक रोशन और ऐर्श्वया राय की केमिस्ट्री को सराहा तो खूब गया लेकिन अपने विषय के कारण यह बॉक्स आफिस पर कोई खास कमाल नहीं कर पायी। यदि किसी फिल्म ने गोवा को सबसे ज्यादा लोकप्रिय बनाया तो वह थी अनिल कपूर, दीपिका और रणवीर सिंह की फिल्म 'दिल चाहता है' इसमें गोवा के चापोरा फोर्ट को बहुत सुंदरता के साथ सेल्यूलाइड पर उतारने का प्रयास किया गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि गोवा की सैर पर जाने वाले लोग गूगल पर 'दिल चाहता है' फोर्ट को सर्च करते दिखाई देते हैं।

हिन्दी फिल्मों में हास्य और स्टण्ट का घालमेल करने वाले रोहित शेट्टी ने अपनी गोलमाल श्रृंखला में गोवा का खास उपयोग किया है। रोहित ने अपनी इस श्रृंखला की अब तब बनी तमाम फिल्मों में दोना पाउला बीचए फोर्ट अगुआडा और पणजी स्थित जीएमसी काम्पलेक्स की लोकेषन्स को रोमांचक अंदाज में पेष करने में सफलता पायी । गोवा की पृष्ठभूमि का उपयोग कर सफलता का कीर्तिमान बनाने में अजय देवगन की फिल्म 'सिंघम' भी उल्लेखनीय है। इस फिल्म के एक्शन सिक्वेंस में दोना पाउल जेट्टी का इस तरह से उपयोग किया गया कि अब जो पर्यटक गोवा में इस स्थान पर जाते हैं तो गाइड यह बताना नही भूलते कि इस जगह पर जयकांत शिर्के के गुण्डों और बाजीराव के बीच धुंआधार मारपीट हुई थी। इस फिल्म का निर्देशन भी रोहित शेट्टी ने किया था।

रोहित शेट्टी की एक अन्य फिल्म दिलवाले में भी गोवा की लोकेशन्स का जमकर उपयोग किया गया। फिल्म में यह दिखाया गया था कि शाहरूख खान और वरूण धवन गोवा में रहकर कार रिपेयरिंग वर्कशाप चलाते हैं। इस फिल्म में यू तो पूरे गोवा के दर्शन होते है लेकिन इसकी ज्यादातर शूटिंग पंजिम चर्च पर हुई थी। शाहरूख खान की एक अन्य फिल्म जोश में भी गोवा की पृष्ठभूमि दिखाई गई है। रोहित शेट्टी और संजय भंसाली की तरह ही अजय देवगन के लिए भी गोवा की लोकेशन्स भाग्यशाली साबित हुई है। रोहित शेट्टी की फिल्मों के अलावा अजय देवगन की सफल सस्पेंस फिल्म दृश्यम को भी गोवा में ही फिल्माया गया है। फिल्म का नायक विजय सालगांवकर गोवा में केबल टीवी का व्यवसाय करता है। वह अपने परिवार के साथ सत्संग और खरीददारी के लिए पंजिम जाता है। उसका घर भी गोवा की सुंदर लोकेशन पर स्थित है।

इन फिल्मों के अलावा रोहन सिप्पी निर्देशित क्राइम थ्रिलर दम मारो दम भी उल्लेखनीय है जिसमें निर्देशक ने 2 से 3 हजार लोगों की भीड एकत्रित कर गोवा के अरपोरा मार्केट में शूटिंग की थी। गोवा की पृष्ठभूमि पर आधारित एक अन्य फिल्म है गो गोवा गोन ए फाइंडिग फेनीएडियर जिंदगी ए लेडिज वर्सेस रिकी बहल नाम शबाना और भूतनाथ शामिल है। महमूद निर्मित अमिताभ की फिल्म बाम्बे टू गोवा में केवल नाम ही नाम था बाकी पूरी फिल्म बस में ही फिल्मायी गई थी। हिन्दी फिल्मों के अलावा हालीवुड की कुछ फिल्मों में भी गोवा को शामिल किया गया है। इन फिल्मों दूसरे विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित जासूसी फिल्म द सी वोवेल्सएबोर्न सुपरमेसीए शेडो आफ द कोबरा और द लेटर्सए बेंकाक हिल्टन शामिल है।

फिल्मों की लोकेशन और पृष्ठभूमि के अलावा गोवा का लोकसंगीत भी फिल्मों में काफी पसंद किया गया है। संगीतकार प्यारेलाल के गुरू एंथोनी गोंसाल्विस भी गोवा के ही थे। उन्हें श्रृद्धांजलि देते हुए प्यारेलाल ने अमर अकबर एंथोनी का गीत माय नेम इज एंथोनी गोंसाल्विस रचा था। गोवा की पृष्ठभूमि पर आधारित गीत ना मांगू सोना चांदी मुंगडा ए को श्रोताओं ने खूब सराहा है।

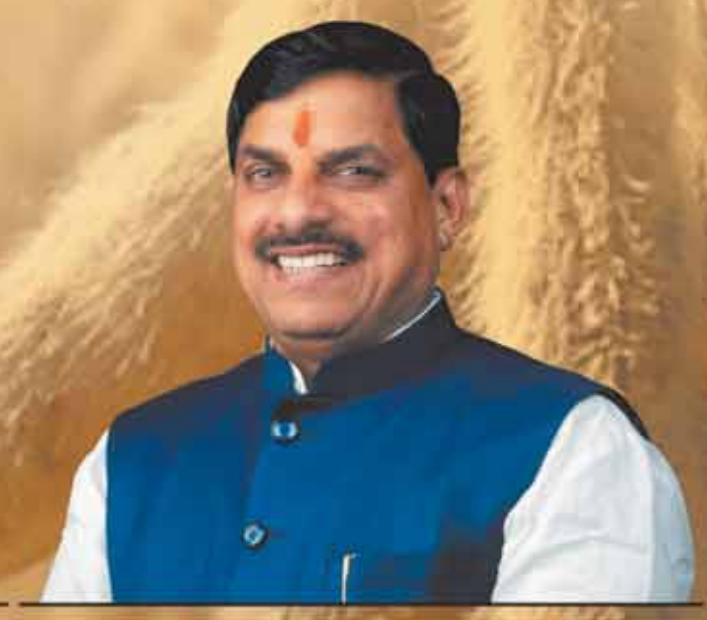

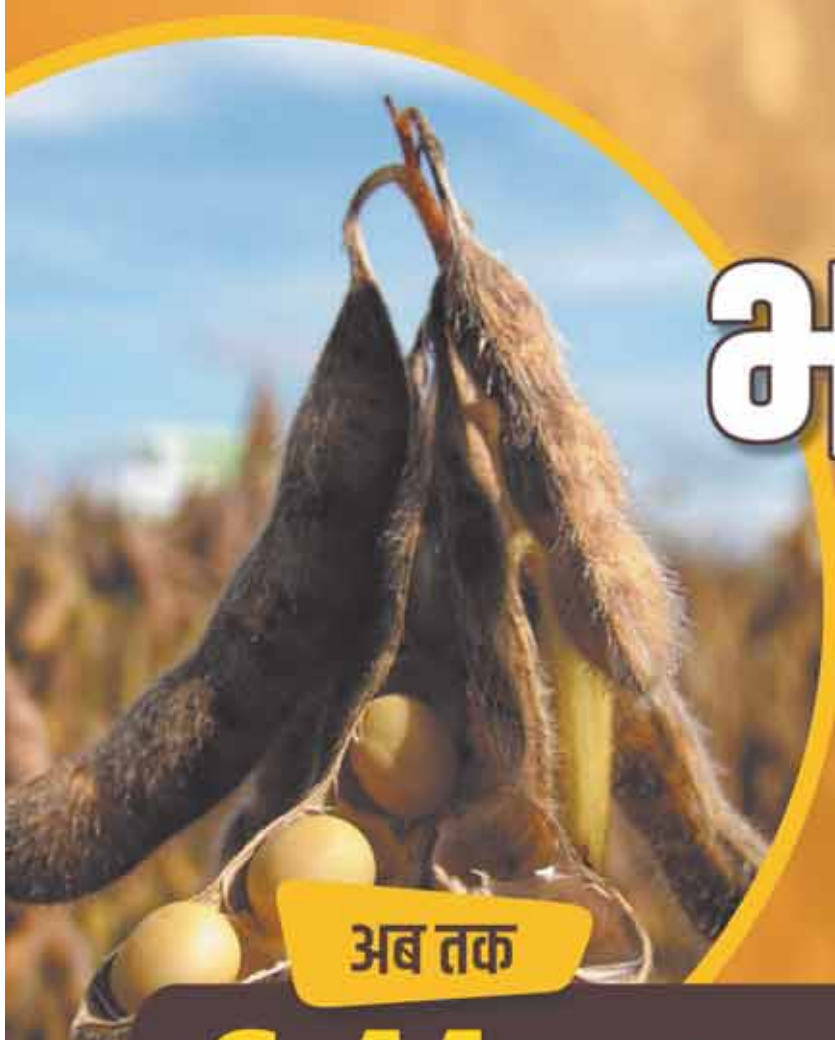

अन्नदाता की समृद्धि
मध्यप्रदेश की प्रगति
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
सोयाबीन भावांतर योजना
अंतर्गत
मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
द्वारा
3.77 लाख
किसानों को
₹810 करोड़ की
राशि का अंतरण
अब तक
6.44 लाख किसानों को
₹1292 करोड़ की राशि अंतरित
28 दिसम्बर, 2025
भगतसिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जावरा, जिला रतलाम
विकास और सेवा के 2 वर्ष
डॉ. मोहन यादव का अभ्युदय मध्यप्रदेश
सीधा प्रसारण
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP
D-11176/25